ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन-चैत्र २०७६-७७ मार्च २०२०

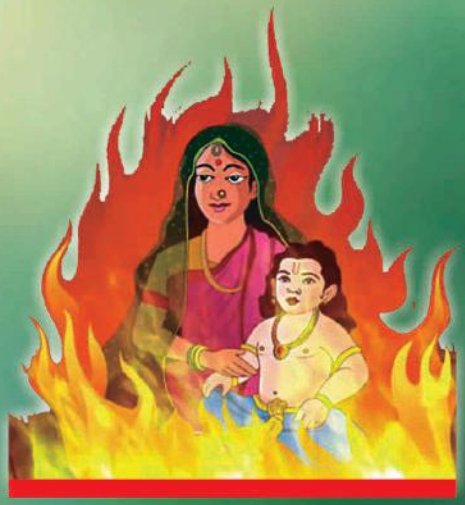

आओ प्रेम के
रंग में रंग लें...

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ

24 मार्च

शाम 6:30 बजे

अगर आप इस बैच में एडमिशन लेना चाहते हैं तो पहले ही स्थान आरक्षित कराएँ।

बेसिक इंग्लिश

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ

17 फरवरी

दोपहर 3:00 बजे

कक्षा स्थल : 707, प्रथम तल, मुखर्जी नगर (बत्रा सिनेमा के सामने), दिल्ली-110009

करेंट अफेयर्स क्रैश कोर्स

आरंभ

20 मार्च (क्लासरूम कार्यक्रम) | 30 मार्च (ऑनलाइन कार्यक्रम)

ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों में उपलब्ध

कुल 35-40 कक्षाएँ (लगभग 120 घंटे)

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली) : 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
☎ 87501 87501

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज) : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
☎ 8750187501

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन-चैत्र	२०७६-७७	वर्ष ४०
मार्च	२०२०	अंक ८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अनूठी गुरु दक्षिणा : शिक्षिका के माता-पिता व भाई नहीं, बच्चों ने 1.71 लाख का किया कन्यादान

पाली की शिक्षिका हेमा प्रजापत की शादी में बच्चों ने निभाई रस्में

छुट्टी होने के बाद भी 2 घंटे निशुल्क पढ़ाती

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

गुरू शिष्य परम्परा और शिष्यों की गुरू के प्रति श्रद्धा के अनेक प्रसंग हम सबने सुने होंगे। आधुनिक युग में हम सब इस बात से दु:खी भी होते हैं कि अब नई पीढ़ी में वैसी श्रद्धा और सम्मान की भावना नहीं रहीं।

आइए आपको एक गौरवशाली घटनाक्रम से अवगत करता हूँ। जानकर हम सबको अच्छा लगेगा और हम गर्व से कह सकेंगे ''हाँ नई पीढ़ी भी अपने गुरूजनों के प्रति वैसी ही श्रद्धा रखती है। हमारे भारतीय संस्कार अभी मरे नहीं हैं।

प्रसंग है राजस्थान के पाली जिले के सुन्दर नगर का। राजश्री स्कूल की अध्यापिका श्रीमती हेमा प्रजापति का बचपन बड़े संघर्षों में बीता। मात्र ६ वर्ष की अवस्था में पिता का निधन हो गया। मात्र १६ वर्ष की थीं तब माताजी भी दुनिया से विदा हो गईं। एकमात्र छोटी बहन का पालन पोषण करते हुए हेमा जी ने स्वयं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय से गणित से एम.एस.सी. किया। फिर बी.एड. कर वे शिक्षिका हो गईं। बस इसके बाद तो उन्होंने अपना पूरा जीवन केवल अपने विद्यार्थियों के लिए समर्पित कर दिया। वे छुट्टियों के दिन भी कमजोर विद्यार्थियों को नि:शुल्क ट्यूशन पढ़ाती थीं। उन्होंने ५ वर्ष में मात्र ६ छुट्टियाँ लीं। जब उनके विवाह का अवसर आया तो प्रश्न था आर्थिक व्यय और उन व्यवस्थाओं का जो पिता-भाई और परिजन करते हैं।

बस विद्यालय के १२०० बच्चे तैयार हो गए इस भूमिका का निर्वाह करने हेतु। जेब खर्च, गुल्लक और माता पिता से प्राप्त छोटी-छोटी राशियाँ मिलकर हो गए १ लाख ७१ हजार रु.। विद्यालय प्रबंधन और सहयोगी शिक्षक परिवार ने हर उस कार्य को सम्पन्न किया जो परिवार के परिजन करते हैं।

शिष्यों के द्वारा अपनी ही गुरु के कन्यादान के इस अनूठे प्रसंग ने देखने सुनने वालों को द्रवित कर दिया। भीगी आँखों से बेटी और बहिन को विदा करने वाले ये सब बच्चे किसी महापुरुष से कम हैं क्या?

हेमा दीद कहती है- ''इस गुरु दक्षिणा से मैं एक बार फिर ऋणी हो गई। अब इस ऋण को मैं उतारूँगी बच्चों को पढ़ाकर।''

धन्य हैं आधुनिक पीढ़ी के ये गुरु और उनके शिष्य। प्रणाम सबको।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- जंगल में मंगल - सुधा भार्गव ०५
- जंगल में होली - विनोद कुमार विक्की ११
- अनोखी होली - कुँवर प्रेमिल १४
- गुझिया कैसे खांए - डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल' १६
- ट्यूशन का मायाजाल - डॉ. फकीरचन्द्र शुक्ला २८
- प्यारी गौरैया - जया मोहन ३४
- आधा गिलास - दिलीप भाटिया ३८
- भाई बहन का दु:ख - सीमा जैन 'भारत' ४२

लघु आलेख

- रानी अवंतीबाई का... - भूपिन्दर सिंह आशट २५

संवाद

- नव संवत्सर के... - डॉ. गिरीशदत्त शर्मा २२

कविता

- हारी सदा बुराई - शिवचरण चौहान ०८
- रंग पर्व पर - मधुर गंजमुरादाबादी ०९
- आ गई होली - सूर्य कुमार पाण्डेय १३
- अमर शहीद... - डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' ३१
- आए सबकी बारी - पवन पहाड़िया ४७

बाल प्रस्तुति

- प्यारी चिड़िया रानी - पायल धनगर ३५
- बचपन - अदिति पटेल ३६
- खाओ तुम भरपूर मिठाई - शीतल ५०

चित्रकथा

- होली में... - देवांशु वत्स १०
- मूर्खता - संकेत गोस्वामी १८
- अगरबत्ती की सुगंध - देवांशु वत्स ४५

स्तंभ

- स्वयं बनें वैज्ञानिक - राजीव तांबे / सुरेश कुलकर्णी १२
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे १९
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी २६
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३२
- यह देश है वीर जवानों का (६) - ३३
- संस्कृति प्रश्नमाला - ३६
- गाथा वीर शिवाजी की - ३७
- विषय एक कल्पना अनेक - डॉ. श्रीप्रसाद ४०
- - गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ४०
- - चक्रधर शुक्ल ४१
- पुस्तक परिचय - ४४
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४६
- आपकी पाती - ४६
- छः अंगुल मुस्कान - विष्णुप्रसाद चौहान ५०

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

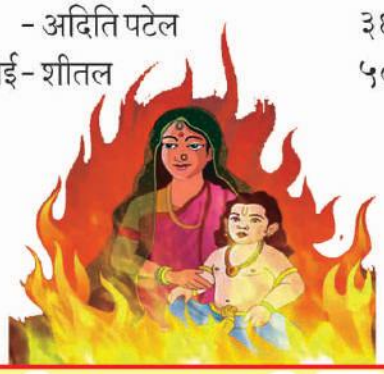

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

जंगल में मंगल

कहानी

सुधा भार्गव

एक जंगल में पलाश का पेड़ अपने मित्र मुर्गे के साथ रहता था। वह उसके सुख दुःख का साथी था। दिसम्बर जनवरी की कड़क ठण्ड में पलाश थर-थर कांपने लगा। उसके सुन्दर-सुन्दर फूल, हरे-हरे पत्ते सब ही तो झड़ गए। ऐसे समय उस पर बसेरा करने वाले पक्षियों ने उसका साथ नहीं दिया। ऐसे में वह अकेला बड़े साहस से अपने अच्छे दिनों के आने की प्रतीक्षा करने लगा। मुर्गे को अपने मित्र की यही बात अच्छी लगती थी।

फरवरी में ही पलाश के भाग्य ने पलटा खाया।

ठंडी हवाओं ने अपना रुख बदला। सूर्य की गुनगुनी धूप पाते ही पेड़-पौधे, जीव जंतु अंगड़ाई ले उठ बैठे। कोमल-कोमल नये पत्तों से पलाश का शरीर ढक गया। लाल-नारंगी रंग की कोंपलें फूटने लगीं। देखते ही देखते वह चटख लाल केसरिया फूलों वाला जंगल का राजा लगने लगा। उसके फूलों की सुगंध हवा में घुल गई और चिड़ियाँ आकर अपने घोंसले बनाने लगीं। इनकी चहचहाहट से मीठे-मीठे गीत धरती पर उतर आए।

ऐसे समय में खरगोश को उदास देख पलाश को बड़ा अचरज हुआ।

''पूरी धरती इस समय हँस रही है और तुम खरगोशिया इतने दुखी?''

''हाँ, गाँव -शहर में बच्चे होली खेलने की तैयारी में लगे है। कोई बाजार रंग लेने गया है तो कोई पिचकारी। मेरा मन भी होली खेलने को करता है।''

''तो किसने मना किया है मेरे छोटे खरगोशिया? होली तो मस्ती का, मिलन का त्यौहार है। तुम अपने साथियों के साथ खेलो। मुझे भी अच्छा लगेगा।''

''उफ् खेलूं कैसे? रंग तो है ही नहीं।''

''रंग तो मैं चुटकी बजाते ही तुम्हें दे सकता हूँ। कल जब तुम यहाँ आओ तो अपने साथ बड़ी सी मटकी ले आना।''

''उफ् मटकी कहाँ से लाऊँगा?''

''हाथी से बोलो न! वह अपनी चतुराई से मटकी ढूंढ निकलेगा।''

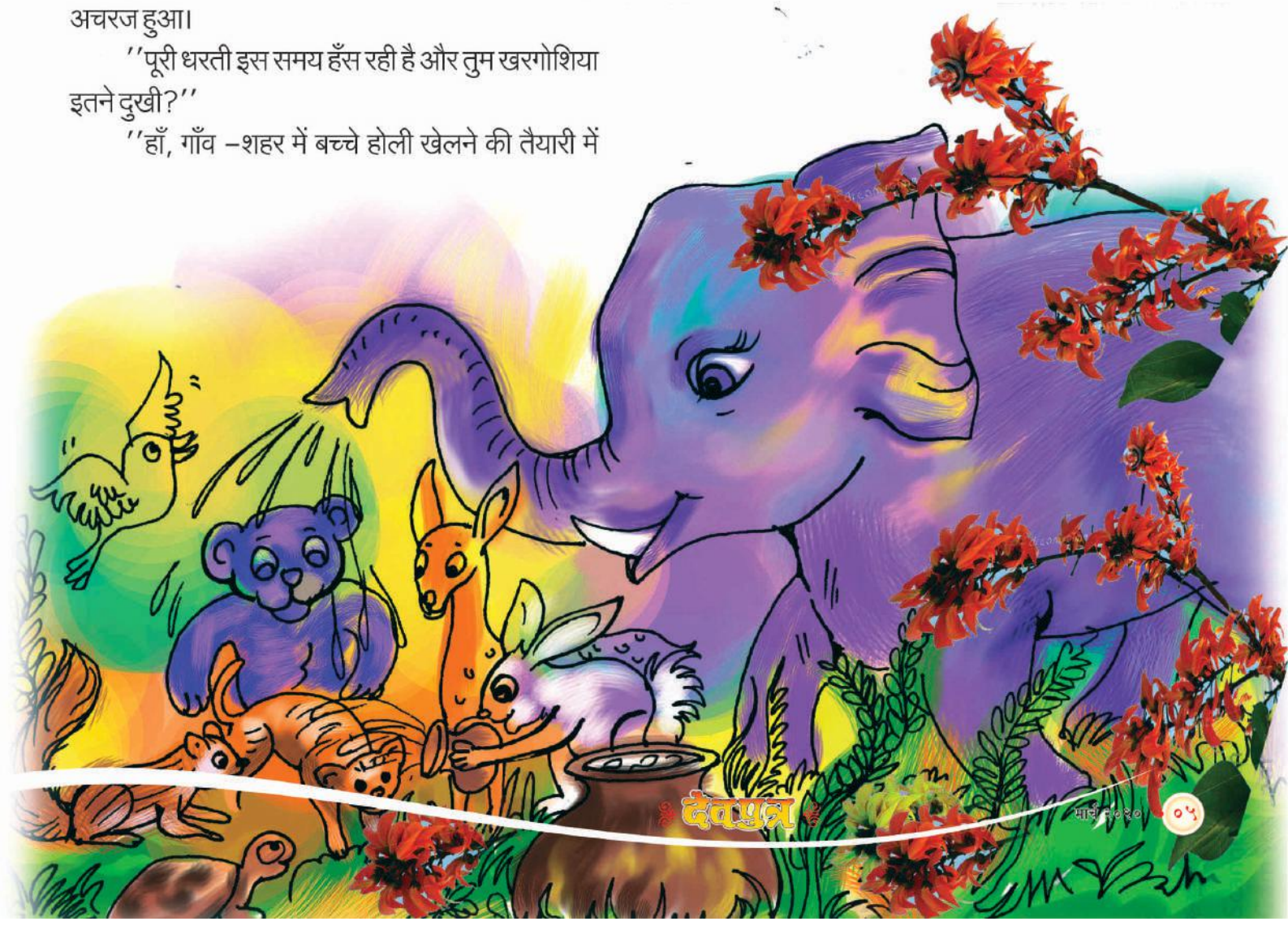

खरगोश ने पुकारना प्रारंभ कर दिया। ''हाथी–हाथी तुम कहाँ हो? जल्दी आओ।''

हाथी दौड़ता–हाँफता आया ''खरगोशिया क्या हो गया?''

''अरे इसे एक मटकी चाहिए।''

''बस एक यह तो एक मिनट का काम है।''

वह खरगोश को अपनी पीठ पर बैठा कर तेजी से चल दिया और एक कुम्हार की झोंपड़ी के आगे ही रुककर दम लिया। वहाँ मिट्टी से बने मटके–मटकी पसरे बैठी थी। हाथी ने सूंड से मटकी उठाई और खरगोश को थमा दी। आह! उसका चेहरा तो कमल की तरह खिल गया।

दूसरे दिन धूप निकलते ही खरगोश मटकी लेकर पलाश के पास आया पर पागलों की तरह लौट पड़ा– ''भागो...भागो दूर जंगल में आग लगी है।''

''कहाँ? अरे वहां तो मेरे भाई बहन खड़े हैं। सूर्य की किरणें जब हमारे पत्तों पर पड़ती हैं तो वे आग की तरह चमकने लगते हैं।'' पलाश बोला।

''ओह! ऐसा भी होता है।'' उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी गई।

पलाश ने खूब जोर से अपनी टहनियों को हिलाया। झर–झर करके उसके फूल खरगोश पर बरसने लगे।

''जितने फूल तुम चाहो ले जाओ।''

''लेकिन मैं करूँगा क्या इनका।''

''फूलों को आज रात में मटकी भर पानी में भिगो देना सुबह तक उनका रंग भी तैयार। कल उससे खूब होली खेलना।''

उसने जल्दी–जल्दी फूलों को मटकी में भरा और फुदकना शुरु कर दिया।

आ रे हाथी आजा घोड़ा
बिल्ली भालू तू भी आजा
मिलकर छका छक कूदेंगे
रूठा रूठी छोड़ छाड़ के
रंगों से होली खेलेंगे।

देखते ही देखते खरगोश के दोस्त फूलों की मटकी को घेर कर बैठ गए। हाथी पास के तालाब से अपनी सूंड में पानी भर कर ले आया और उसमें भर दिया। रात भर कोई भी नहीं सोया। झाँक–झाँक कर देखते पानी रंगीन हुआ कि नहीं। उनके लिए तो यह एक बहुत बड़ा अचरज था।

सूर्य देवता निकल आये। सूरजमुखी खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी आवाज को सुन उन्हें होश आया– अरे, दिन निकल आया।''

खरगोश इठलाते हुए बोला– ''अब तो तुम सब पर खूब रंग डालूँगा और अपने को बचा कर रखूँगा।''

''न...न...ऐसा बिलकुल न करना। मेरे फूलों के पानी में तुम्हारा भी भींगना आवश्यक है। इससे तुम चंगे रहोगे और मच्छर भी दुम दबा कर भागेंगे।''

''अरे पलाश! मैंने तो अभी तेरे ऊपर दो तीन मच्छर भिनभिनाते देखे हैं। तुमझे तो डरे भी नहीं।'' बिल्ली आँखें मटकाते हुए बोली।

''तुझे नहीं मालूम बहना मेरी खुशबू से मच्छर खिंचा चला आता है और मुझसे टकराते ही बच नहीं पाता। अगर भूले भटके मेरे फूल में इसने अंडे दे भी दिए तो उसमें से बच्चे कभी जीवित निकल ही नहीं सकते।''

''तुझमें तो बड़ी ताकत है। पेड़ों का राजा है राजा। मेरे घर भी चल न। बहुत मच्छर हैं वहाँ तुझे देखते ही भागेंगे अपनी जान बचाकर।''

''कितना अच्छा होता यदि मेरे पैर होते। दूसरों का खूब भला करता, बीमार को ठीक कर देता।''

''क्या कहा– बीमारी भगा देने का जंतर–मंतर भी तेरे हाथ में है? अरे वाह!'' हाथी जोर से अपनी सूंड हिलाने लगा। लगता था वह बहुत खुश है।

''हाँ! कल देखना तमाशा। होली के दिन शहरों में खूब पकवान मिठाई खाई जाएगी और फिर पेट गड़बडाएगा। खाने वाला कराहेगा हाय मेरा पेट...। उन्हें तो मालूम भी नहीं होगा मेरा एक फूल चबाकर खाने से दर्द गायब हो जाता है।''

''हम तो जरूर दो एक फूल बचाकर रखेंगे, हाथी भैया के अवश्य काम आयेंगे। इसका पेट तो देखो नगाड़े जैसा। यह भी खूब खाता होगा।''

''देख बिलौटी! ऐसी कहेगी तो...''

''तो! तो क्या करेगा?''

''बताऊँ?''

''हाँ हाँ, बता।''

देवपुत्र प्रश्नमंच?

(१) विक्रम संवत् के प्रवर्तक कौन थे?
(अ) राजा भर्तृहरि
(आ) सम्राट विक्रमादित्य
(इ) भगवान राम

(२) वीर विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में ज्योर्तिविज्ञान के प्रसिद्ध विशेषज्ञ कौन थे?
(अ) क्षपणक
(आ) धन्वन्तरि
(इ) वराहमिहिर

(३) विक्रमादित्य के समकालीन महान संस्कृत कवि कालिदास का प्रसिद्ध नाटक कौनसा था?
(अ) मेघदूतम्
(आ) ऋतुसंहार
(इ) अभिज्ञान शाकुन्तलम्

(४) विक्रमादित्य प्रमुख रूप से जिन्हे पराजित कर यशस्वी हुए?
(अ) शक
(आ) हूण
(इ) कुषाण

(५) विक्रमादित्य की राजधानी का प्राचीन नाम क्या था?
(अ) धारा नगरी
(आ) उज्जयिनी
(इ) अयोध्या

(६) विक्रमादित्य और बेताल की कथाएँ हिन्दी में किस ग्रंथ के रूप में प्रचलित हैं?
(अ) बेताल पच्चीसी
(आ) सिंहासन बत्तीसी
(इ) विक्रम बेताल संवाद

(७) विक्रमादित्य की राजधानी किस नदी के किनारे बसी थी?
(अ) नर्मदा
(आ) शिप्रा
(इ) चंबल

(८) विक्रमादित्य की प्रमुख विशेषताओं में एक है?
(अ) न्यायवादिता
(आ) तन्त्र साधना
(इ) वैभवशाली होना

(९) विक्रमादित्य का प्रमुख आराध्य शक्तिपीठ कौनसा था?
(अ) गढ़कालिका
(आ) भूखी माता
(इ) हरसिद्धि

(१०) विक्रमादित्य के भाई का नाम जो प्रसिद्ध योगी हो गए थे।
(अ) गोरक्षनाथ
(आ) भर्तृहरि
(इ) गोपीचंद

(उत्तर इसी अंक में)

''अभी बताता हूँ।''

उसने फुर्ती से बिल्ली को सूंड से उठाकर रंगीले पानी में डाल दिया।

सब एक साथ चिल्ला उठे– बुरा न मानो होली है।

भालू भी अपने को ज्यादा रोक न सका, केसरिया पानी अपनी हथेली में भरकर दूसरों पर डालने लगा। हाथी ने तो अपनी सूंड को ही पिचकारी बना लिया और साथियों को एक बार में ही स्नान करा दिया।

पलाश भी इस होली का आनंद उठा रहा था। पर उसे चिंता लग गई कि पानी में अधिक भीगने से उसका कोई साथी अस्वस्थ न हो जाए। बोला– ''तुम सब बहुत थके–थके लग रहे हो। अब कुछ गाना वाना हो जाए।''

जंगल में मंगल करने वाली जल्दी ही गोला बनाकर खड़े हो गए और बीच में बैठ गया मुर्गा। सब मिलकर गाने लगे–

होली की धूम मची जंगल में
जंगल में हो गया मंगल
दंगल–वंगल नहीं करेंगे
पहनेंगे प्यार का कंगन।

होली के धूम–धड़ाके से सच में ही यह टोली थक गई थी। अगले साल फिर इसी तरह होली मनाने का निश्चय उन्होंने किया और भोजन की तलाश में उस घने जंगल में अदृश्य हो गए।

– बैंगलुरु (कर्नाटक)

हारी सदा बुराई

गीत

शिवचरण चौहान

वेद वाक्य है अच्छाई से
हारी सदा बुराई।
अच्छाई की महिमा, सारे-
जग ने गाई भाई।।
सत्य, सत्य ही रहता हरदम-
झूठ, झूठ है होता।
सत्य शाश्वत रहे, झूठ का-
अन्त बुरा है होता।।
बहुत बुरा था हिरणाकश्यप-
क्रोधी-अत्याचारी।
खुद को ईश्वर कहता था-
थर्राती दुनिया सारी।।

पर बेटा प्रह्लाद, झूठ को-
सत्य नहीं कहता था।
इसीलिए वह सदा पिता के
दिए कष्ट सहता था।
मूर्ति बुराई की हिरणाकुश-
उसने मन में ठानी।
अच्छाई का रूप पुन्न है
कर दो खत्म निशानी।।

लाख प्रयास किए उसने-
सुत जाए जान से मारा।
किन्तु उसे सच्चाई पर-
ईश्वर का मिला सहारा।।
अन्त बुरे का हुआ बुरा-
बह गया असमय मारा।।
पुन्न अमर हो गया,
पिता को थूक रहा जग सारा।।
हारा झूठ, सत्य की दुनिया ने
जयकारी बोली।
उसी याद में आज तलक-
हम मना रहे हैं होली।।

– कानपुर (उ.प्र.)

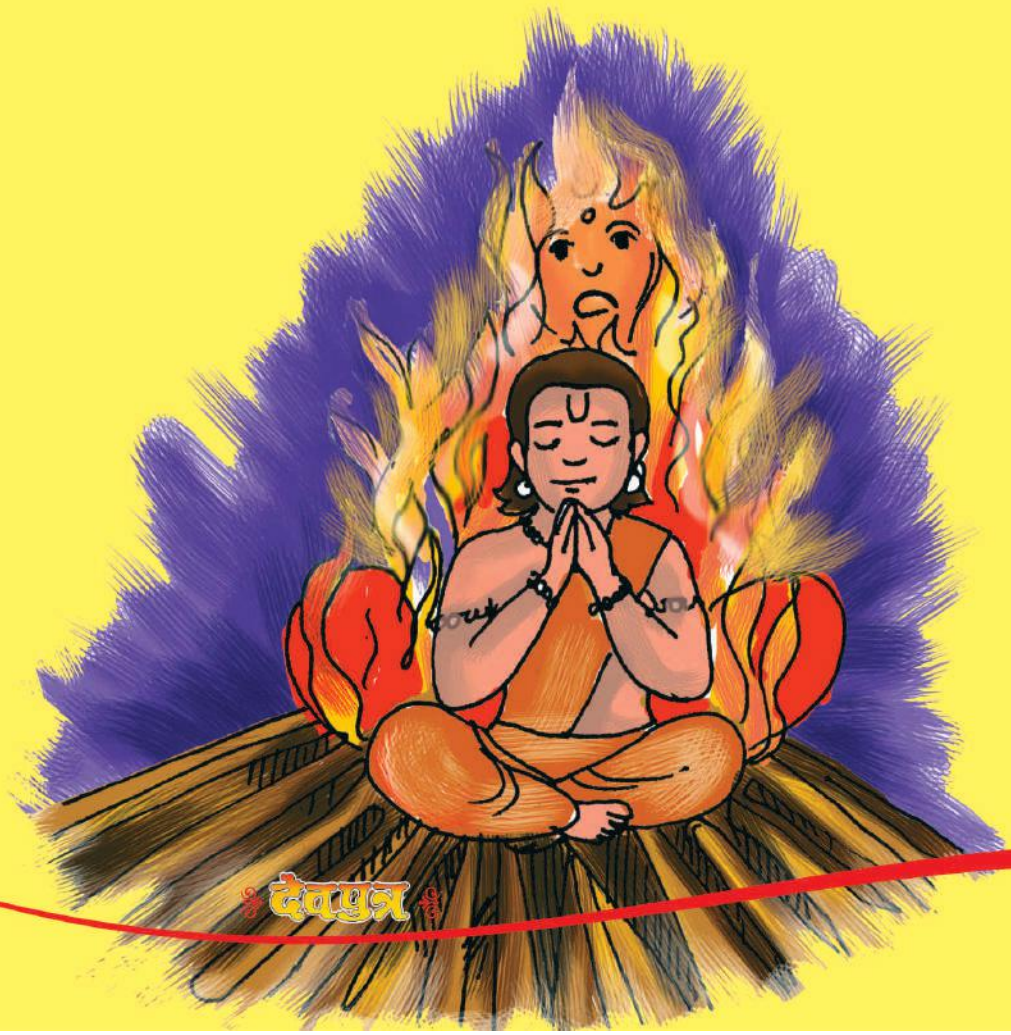

रंग पर्व पर

कविता

मधुर गंजमुरादाबादी

आपस में सब बाँट रहे हैं,
प्यार भरे उपहार।
हँसी-खुशी से सभी मनाते,
होली का त्यौहार।।
बैर, द्वेष, दुर्भाव जलाती,
यह होली की आग,
ढोलक, झाँझ, मृदंग बज रहे,
ग्वाले खाते फाग।।

तरह-तरह के रंग हैं लेकिन,
मनहर केसर रंग।
इसकी रंगत देख के दुनियाँ,
आज हो रही दंग।।
सारे भेद दूर करता है,
शुभ मधुमय व्यवहार।
दीन-दुखी, निर्बल-निर्धन का,
करते सब सत्कार।।

राम अवध में, ब्रज में मोहन,
देते शुभ संदेश।
रंग पर्व पर इन्द्रधनुष बन,
चमके भारत देश।।

– गंजमुरादाबाद (उ.प्र.)

होली में...

चित्रकथा : देवांशु वत्स

जंगल में होली

कहानी

विनोद कुमार विक्की

चंपू चूहा होली के आगमन से एक सप्ताह पूर्व ही काफी उत्साहित था। मारे खुशी के वह फूल के गुब्बारा बना जा रहा था। व ना तो रंग गुलाल खरीदा और ना पिचकारी। वह तो इस बार सबको होली की डिजिटल बधाईयाँ देना चाहता था।

वह सुन्दर कविताओं व तस्वीरों से सुसज्जित इलेक्ट्रॉनिक होली बधाई संदेश को अपने नाम से संपादित कर अपने लैपटॉप व मोबाइल के मेमोरी में संचित करने लगा। वह दिन–रात होली के नए–नए बधाई संदेशों के संग्रह के जुगाड़ में जुट गया।

संदेश किसी और को पता ना हो जाय इसलिए वह किसी को भी अपना लैपटॉप या मोबाइल छूने नहीं देता।

होली के एक दिन पहले अर्द्धरात्रि से ही इलेक्ट्रानिक बधाई संदेशों को पूरे जिंगालाल जंगल में सबसे पहले फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, ई–मेल, एसएमएस आदि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा अपने मित्रों व रिश्तेदारों को भेजने की वह धांसू योजना बना चुका था।

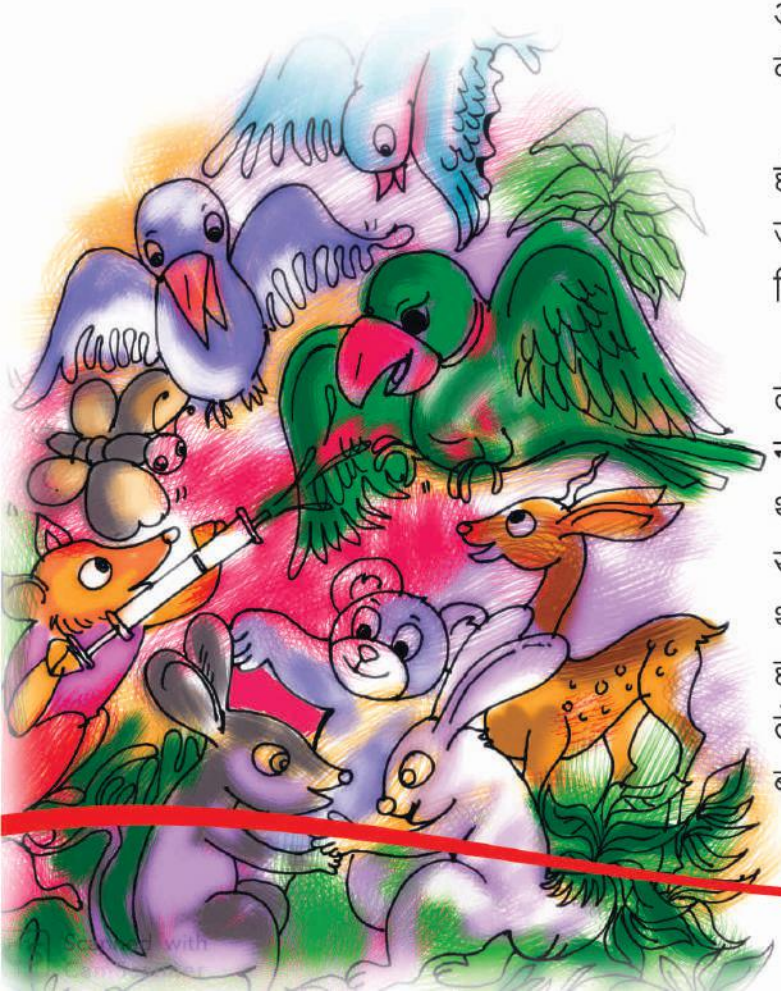

वह मन ही मन ख्याली खिचड़ी पकाने लगा। इस बार तो मैं गुल्ले गधा, फुसफुस कोबरा, चिरौंजी चीता, मटरू मुर्गे से ज्यादा लाइक, कमेंट्स, रिप्लाई बटोरूंगा।

देखते ही देखते होली भी नजदीक आ गई। चंपू होली के एक दिन पूर्व आधी रात को अपना मोबाइल व लैपटॉप लेकर बैठ गया। वह धड़ाधड़ फेसबुक, व्हाट्सएप आदि पर रंग–बिरंगे कविता व चित्र वाले शुभ होली के संदेश को सेंड, फॉरवर्ड, मेल करने लगा।

पर हाय रे चंपू का फूटा भाग्य नेटवर्क नहीं रहने से सर्वर डाउन होने के कारण ना तो एक भी संदेश सेंड हो रहा था और ना ही अपडेट।

चंपू सारी रात मोबाइल व लैपटॉप में उलझा रहा पर स्थिति जस की तस बनी रही।

इसी ऊहापोह में सुबह–सुबह ही रातभर जगे चंपू की आँख लग गई। दोपहर के समय बाहर हो रहे शोरगुल से चंपू की नींद खुल गई। उसने खिड़की से बाहर झांक कर देखा।

सभी जानवर आपस में हाथ मिलाकर व गले मिलकर होली की बधाइयाँ और शुभकामनाएँ दे रहे थे। रंग गुलाल उड़ा रहे थे। गुजिया, पुआ, दहीबड़ा आदि एक दूसरे को खिला रहे थे।

डीजे की ताल पर चींची चिड़िया, मन्नू, गिन्नी गौरैया, टीपू तोता पंख फैलाकर फुदक रहे थे। लाल रंग से रंगा ननकू खरगोश उछल उछल कर सबको गुलाल लगा रहा थत्त। सिंपू सियार पिचकारी से सभी पर रंग डाल रहा था। स्वाती शेरनी सबसे गले मिल होली की बधाईयाँ बाँट रही थी। गुलाबी रंग से रंगा गोपू गैंडा एवं हरे रंग से रंगा हम्प्टी हाथी साथ मिलकर ठुमका लगा रहे थे। नीले रंग से रंग चुका ढेंचू गधा एवं जामुनी रंग से रंगी रोज लोमड़ी सभी की मिठाई बांट रहे थे।

यह सब देख चंपू का मन अंदर से दुःखी हो गया। नेटवर्क फेल होने के कारण डिजिटल बधाइयां न दे पाने की वजह से वह काफी मायूस हो चुका था। उसके सारे मेहनत व उत्साह पर पानी फिर गया। वह मन ही मन इलेक्ट्रॉनिक गैजेट व नेटवर्क को कोसने लगा।

तभी जिल्लू जिराफ की नजर उदास चंपू पर पड़ी। उसने गर्दन उचकाकर ''होली है चंपू'' बोलते हुए उसे बाहर निकाल लिया। बिल्लू बिल्लौटा सहित तमाम जानवर रंग गुलाल लगाकर चंपू से गले व हाथ मिलाने लगे। वे चंपू को होली की बधाईयाँ देने लगे। चंपू की सारी उदासी दूर हो गयी और वह पूरे जोश से होली के उत्सव की पार्टी में शामिल हो गया। उसने बिल्लू बिल्लौटा के हाथ से गुलाल छीन ''हैप्पी होली'' बोलकर हवा में उड़ाने लगा।

उसने महसूस किया कि जो प्यार, अपनापन, सद्भावना व सहानुभूति की अनुभूति गले मिलकर या हाथ मिलाकर प्रत्यक्ष बधाई संदेश देने में है वह मजा मोबाइल, लैपटॉप पर प्रेषित इलेक्ट्रानिक, डिजिटल बधाई संदेश पर मिलने वाले सैकड़ों लाइक व कमेंट्स मे नहीं।

– महेशखूंट बाजार (बिहार)

॥ स्तम्भ ॥

स्वयं बनें वैज्ञानिक :

रंगीन जोड़ी

आलेख
डॉ. राजीव तांबे

अनुवाद
सुरेश कुलकर्णी

आज हम आपको बताने जा रहे है कि रंगीन जोड़ी क्या होती है। चलो इसके लिए सामग्री क्या लगेगी यह लिख लीजिए।

सामग्री जो इस प्रयोग के लिए वांछित है, वह है

सफेद रंग के कागज के ८ टुकड़े

अन्य किसी रंग के कागज के ८ टुकडे

(एक बात का ध्यान रखे की सभी टुकड़े एक ही आकार के हों, अगर आपने कपड़े के टुकड़े लिए तो भी चलेगा), एक थैली।

आपने सामान तो ले लिया है। अब चलो हम अपना प्रयोग शुरु करते हैं। हो जाइए तैयार आपके पास जो थैली है उसमें सफेद रंग के सभी टुकड़े रखो और उसी थैली में दूसरे रंग के सभी टुकड़े रखो। अब हमारा यह खेल होगा शुरु।

अब दूसरे बच्चों को कहना कि, उस थैली में आँखें बंद करके हाथ डालना और उसमें से कितने अवसर लेकर वह सफेद अथवा रंगीन टुकड़ों की जोड़ी बना सकता है? उसने एक बार में एक ही टुकड़ा थैली के बाहर निकालना है। कम से कम एक या दो अवसर में ही जोड़ी तैयार होती ही है।

यह कैसे संभव होता है? चलो इस प्रश्न या समस्या का समाधान भी हमेशा की तरह बता ही देते है जिससे आपकी जिज्ञासा भी तृप्त होगी।

सीधी सी बात है मित्रो! अगर उस बालक ने पहले अवसर में सफेद रंग का टुकड़ा निकाला तो दूसरे अवसर में अलग रंग का टुकड़ा निकलेगा और तीसरी बार में तो जोड़ी जमना ही है कारण सफेद या रंगीन ही टुकड़ा निकलेगा। समझ गये ना आप? जोड़ी तो जमेगी ही।

करके देखिए आप भी संतुष्ट होंगे।

चलो अब आप तीन रंग के टुकड़े लेकर देखें क्या होता है और जो भी हुआ, जैसे भी हुआ हमको लिखकर भेजना न भूलना। कारण आपके पत्रो की हमेशा प्रतीक्षा रहती है।

– पुणे (महाराष्ट्र)

आ गई होली

कविता

सूर्यकुमार पाण्डे

सबको अपने गले लगाती
आई होली, आई होली
हँसती-गाती, धूम मचाती
आई होली, आई होली

नए-नए पकवान बनाकर
रंग-बिरंगे रूप सजाकर
रंगों में सबको नहलाकर
प्रेमभाव का पाठ पढ़ाती
आई होली, आई होली

कहीं अबीर, गुलाल कहीं पर
मस्ती का मौसम है घर-घर
मारो पिचकारी रंग भर कर
सब पर अपना नेह लुटाती
आई होली, आई होली

फागुन की मस्ती का आलम
पूरे बरस रहे यह मौसम
आओ डूबें, उतराएँ हम
झगड़े-टंटे दूर भगाती
आई होली, आई होली

– लखनऊ (उ.प्र.)

अनोखी होली

कहानी

कुँवर प्रेमिल

सोकलपुर के घने जंगलों मे बड़े जोर शोर से होली की तैयारियाँ चल रही थी। इस बार की होली का आयोजन चिड़ियों के नाम था। चिड़ियों के नाम की चिट खुली थी, इस कारण बड़े जानवर चिड़ियों का उपहास कर रहे थे।

'यह मुँह और मसूर की दाल'– भालू काका हँसी उड़ाते हुए बोले।

'भूल से भी रंगों की होज में गिर गई तो उन्हें निकालेगा कौन?' बाँगड़ू लकड़बग्घा बड़बड़ाया।

'चिड़ियों के नाम की चिट ही नहीं डालनी थी, जो है सौ–'' ऊँट जी मुँह बिचकाकर बोले। वह गर्दन ऊँची कर ऊँची डालियों से हरी–हरी और नरम नरम पत्तियों का नाश्ता बटोर रहे थे।

इसी तरह हँसी–ठिठोली करते–करते होली का दिन आ गया। अब तक पूरा पक्षी समाज गुपचुप–गुपचुप होली की तैयारियों में जुटा था। किसी को भी कानों कान खबर नहीं हो रही थी।

सुबह से ही पूरा पक्षी समूह एक कौए को घेरकर बैठा था। उसे मूर्खाधिराज की पदवी दी जाने वाली थी।

कालू सियार बोला–

''यह तो अक्ल और शक्ल दोनों से मूर्ख दिखाई देता है।''

''मेरा वश चले तो इसे नाको चने चबाने के लिए मजबूर कर दूँ'' – तुनक मिजाज नेवला था यह। नेवले और सियार की बातें सुनकर दूसरे जानवर हँसे बिना नहीं रहे।

''आज के दिन की शुरुआत हँसते–हँसते हुई है तो बाकी दिन भी ठाठ से गुजरेगा'' – कहते–कहते लोमड़ी भी हर्षविभोर होकर नाचने लगी।

लोमड़ी को नाचते देख जानवरों के बच्चे भी नाचने लगे। होली का त्यौहार उन्हें भी खूब अच्छा लगता था। वे भी उत्सुकता से होली की बाट जोहते रहते थे। ऊँट जी को हरी–हरी पत्तियाँ खाते देख हाथी जी के मुँह में पानी आ गया। बोले– कुछेक पत्तियाँ मुझे भी दे दो ऊँट जी।''

''मुझे भी दो।'' – जिराफ दादा क्यों पीछे रहते।

बकरी बोली– ''अरे शर्म करो लंबुओ! स्वयं लम्बे तगड़े होकर भी 'ऊँट बड़े तुम ऊटपटांग, लंबी गरदन ऊँची टांग' से पत्तियाँ मांग रहे हो।''

ऊँट ने बकरी के कहने का जरा सा भी बुरा नहीं माना बल्कि थोड़ी सी पत्तियाँ उसे भी पकड़ा दीं। बकरी प्रसन्न होकर ऊँट की प्रशस्ति पढ़ने लगी– ''ऊँट जी इतने ऊँचे हैं कि पूछो मत। ऊँचे कद के साथ ऊँचा स्वभाव भी उनकी पीठ पर चढ़कर तो आसानी से पहाड़ की चोटी पर भी कूदा जा सकता है। है न ऊँट जी।''

ऊँट भला क्या कहता। अपनी प्रशंसा किसे बुरी लगती है भला। बकरी की चिकनी–चुपड़ी बातों को वह भली भांति समझ रहा था। उसने थोड़ी सी पत्तियां बकरी को और पकड़ा दी। बकरी उछलती–कूदती वहाँ से नौ–दो ग्यारह हो गई।

अब तक कौए का स्वांग बना दिया गया था। फटी चीथी चिंदियाँ, पंख–पत्तों–लताओं से उसे पूरा ढक दिया गया था। उसकी केवल चोंच ही दिखाई दे रही थी।

एकाएक पक्षियों ने नारा उछाला– ''मूर्खाधिराज, महा मूर्ख काकेश्वर जी को होली की शुभकामनाएँ।''

कौए ने भी अपनी गर्दन टेढ़ी कर सबकी शुभकामनाएँ स्वीकार कर सभी को मूर्खाधिराज की ओर से भी होली की

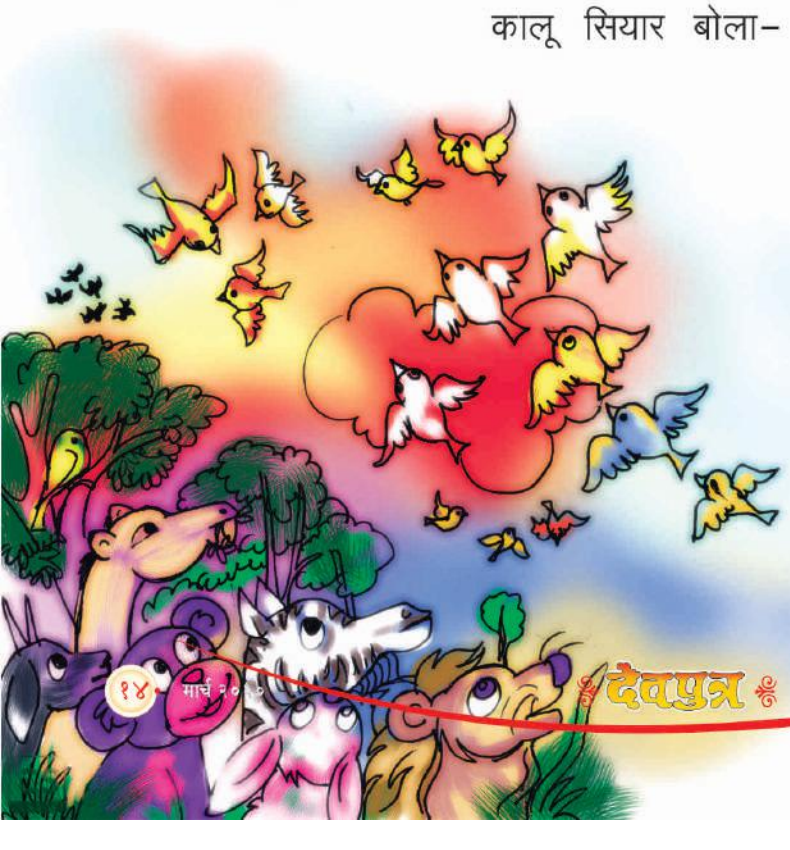

शुभकामनाएँ प्रेषित की तथा आकाश में उड़ने लगा।

उसके पीछे–पीछे पूरा पक्षी समाज भी उड़ने लगा। एक बार कुछ देर के लिए अंधेरा सा छा गया। सभी को पहली बार पता लगा कि जमनेरी के जंगल में हमारे सोकलपुर जंगल में कहीं ज्यादा पक्षी परिवार है। अभी तक ज्यादा पक्षियों का आंकड़ा जमनेरी के नाम था।

पूरा पक्षी समूह आसमान में अपनी दुर्लभ–दुर्लभ आकृतियां बना–बनाकर उड़ रहा था। सभी जानवर आश्चर्य से ये दृश्य देख रहे थे। प्रसंशा भी कर रहे थे। पक्षियों के जमीन, पेड़ों, पत्तों और टहनियों पर बैठते ही बुरा न मानो होती है के साथ एकाएक रंगों की बौछार होने लगी।

''यह क्या ठिठौली है जी'' – शेरसिंह गुर्राए।

''ठिठौली नहीं है जी, होली खेलने का आरंभ हो रहा है।'' किसी ने कहा और पतली गली से भाग निकला।

''यहाँ न रंग है न पिचकारी। यह कैसी होली है भाई'' – भालू जी को भी यह सब समझ के परे था।

तब मूर्खाधिराज कौआ सबको नमस्कार कर सम्मान से खड़े होकर बोला– ''यह सब मेरा ही आविष्कार है श्रीमान्! मैंने रबर की छोटी–छोटी नालियों को आपस में जोड़कर पेड़ और पत्तों टहनियों से आगे बढ़ाकर पूरे परिसर को घेर दिया। फिर वृक्षों की टहनियों से बंधे रंगों के कलशों से जोड़ दिया। मेरे एक इशारे से रंग इन नालियों में बहने लगा। नालियों में असंख्य छेद पहले ही कर दिए गए थे। बस उनके बौछार होने लगी। आज की अनोखी होली मेरे नाम हो गई।

सभी ने खुश होकर पक्षी समाज को धन्यवाद कहा और होली के गीत गुनगुनाते हुए अपने–अपने घर प्रस्थान कर गए।

– जबलपुर (म.प्र.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

मोहित ने भैंस के बारे में राजू से कहा- ''यह मेरे मामा के ससुर के नाती की एकमात्र बुआ के पति की है।'' भैंस का मालिक मोहित का रिश्ता क्या होगा?

(उत्तर इसी अंक में)

गुझिया कैसे खाएं

कहानी

डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'

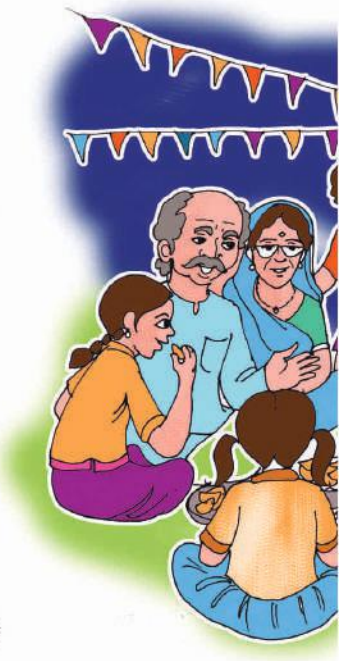

आज होली जलनी है और कल होली खेली जाने वाली है। इसलिए आज बच्चों की छुट्टी है। जब अंकित और प्रिया सोकर उठे, तब देखा कि माँ और दादी गुड़िया बनाने में जुटी हैं। बच्चे बहुत खुश हुए। दोनों बच्चे मंजन आदि करके आ गए।

अंकित बोला –''माँ! गुझिया खाने को दो।''

माँ बोलीं– ''गुझिया शाम को होलिका पर चढ़ाने के बाद ही मिलेगी।''

''माँ ! हम लोग दो–चार गुझिया खा भी लेंगे तो होलिका को क्या कमी पड़ जाएगी?'' अंकित नटखटपन से बोला।

दादी मुस्कराने लगीं। माँ ने कुछ गुस्से में कहा– ''जाओ जाकर नहा लो, सिर मत चाटो।''

अंकित मुस्कराते हुए बोला– ''हम आपक सिर कैसे चाट सकते हैं। हम आपसे इतना दूर खड़े हैं, हमारी तो जीभ भी इतनी लम्बी नहीं है कि आप तक पहुँच सके।''

माँ के कुछ बोलने से पहले ही दादी हँसते हुए बोलीं– ''जाओ! पहले नहा कर आओ।''

प्रिया ने अंकित के कान में धीरे से कहा– ''चलो चलकर नहा लेते हैं, तब तो गुझिया खाने को मिल ही जाएगी।''

दोनों बच्चे नहाने चले जाते हैं। थोड़ी देर बाद बच्चे नहा कर और बाल काढ कर आए और पास में बिछी चटाई पर बैठ गए।

माँ दोनों को दूध–रोटी देती हैं। दोनों बच्चों के मुँह से एक साथ निकला–''माँ! यह क्या दे रही हो, गुझिया दो न।''

दादी बोलीं– ''बच्चो! ध्यान से सुनो। गुझिया बनने के बाद सबसे पहले होलिका पर चढ़ाई जाती है, इसके बाद ही कोई खा सकता है। ऐसा हर साल ही तो होता है, तुम लोग भूल जाते हो।''

बच्चे चुपचाप दूध रोटी खाने लगते हैं। उनके मन में गुझिया खाने की इच्छा बनी हुई थी।

माँ और दादी ने गुझिया बनाकर दोपहर को छीकें पर रख दीं, जिससे बच्चे उस तक न पहुँच सकें। वह लोग थकी होने के कारण सो गईं। पिताजी और बाबा भी कहीं पर काम से निकल गए थे।

अब अंकित और प्रिया छींके की ओर देखते हुए गुझिया खाने की योजना बनाने लगे।

प्रिया छींके की ओर देखती हुई बोली– अंकित! छींका इतना ऊँचा है कि हम लोग उस तक पहुँच नहीं सकते हैं। इसलिए सोचना बेकार है, शाम की प्रतीक्षा करो। पूजा के बाद तो गुझिया मिल ही जाएगी।''

अंकित ने कहा– ''रुको दीदी! पड़ोस से वीरेश, लोकेश और वंदना को बुला लाते हैं। उन्हें भी तो अभी गुझिया खाने को नहीं मिली होगी हम एक दूसरे पर चढ़ कर तो छींके तक पहुँच ही जाएँगे न।

''सुझाव तो अच्छा है।''

और वह लोग पड़ोस से वीरेश, लोकेश और वंदना को बुला लाते हैं। सब बातें करने लगते हैं। गरीबों को ही गुझिया खिला दी जाए।''

पिताजी को डाँटते हुए दादी बोली– ''अमर! तू नास्तिक जैसी बात करता है।''

अब बाबा हँसते हुए बोले– ''अमर की माँ! नास्तिकों जैसी बात कहाँ? तुम ही तो कहती हो कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं। इसलिए अगर बच्चे खाएँगे तो भगवान को अपने आप मिल जाएगा।''

सबकी बातचीत सुनकर प्रिया उठ गई। वह अपनी चोट का दर्द भूलकर बोली– ''दादी! होलिका की पूजा हो गई क्या? अब गुझिया मिलेगी?''

अब बाबा उठकर कहते हैं– ''इसका भोलापन देखकर मुझसे नहीं रहा जाता है।'' कहते हुए वह अन्दर जाकर गुझिया का एक डिब्बा उठा लाते हैं व उसमें से होली

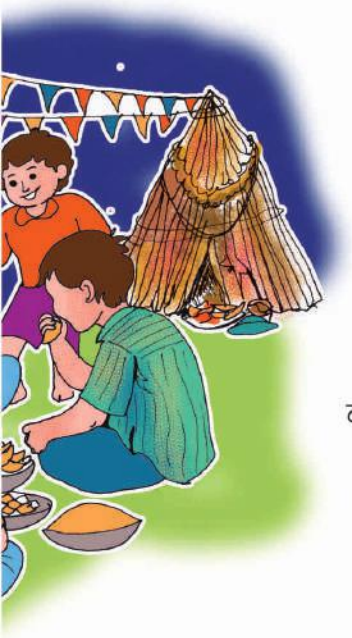

की पूजा के लिए थोड़े से निकाल कर अलग रख दिये बाकी में से एक एक गुझिया निकाल कर प्रिया को दे दिया।

प्रिया गुझिया खाने लगती है। बाबा गुझिया का डिब्बा खोल कर रख देते हैं। अंकित और प्रिया से कहते हैं– ''लो बच्चो! जितनी गुझिया चाहो, खाओ।''

अंकित कहता है – ''लोकेश, वीरेश और वन्दना को भी बुला लाऊँ?''

बाबा कहते हैं– ''हाँ बुला लाओ।''

अंकित गुझिया खाता हुआ जाता है और बच्चों को बुला ला लाता है।

सब बच्चे गुझिया निकाल–निकाल कर खाने लगे। उन्हें देखकर दादी बोली– ''अमर के बाबूजी! तुम ठीक कहते हो। बाल भगवान की सच्ची मूर्तियाँ तो यही हैं। जब बच्चे खुश रहेंगे तो भगवान भी खुश रहेगे।''

बाबा बोले– ''बच्चो। अब तो आप सब प्रसन्न हैं न पर एक बात आपसे पूछूँ?'' ''हाँ हाँ बाबा! पूछिये अवश्य पूछिए।'' बच्चे एक साथ बोल पड़े। बाबा कहने लगे– ''तुम्हे तो गुझिया मिली पर ऐसे भी कई बच्चे हैं जिनके घर गरीबी के कारण गुझिया बनी नहीं होगी?'' बच्चे सोच में पड़ गए। दादी बोली– ''जैसे होली के लिए निकाली है वैसे ही कुछ गुझिया उन बच्चों को भी क्यों न खिलाई जाए?

सब बच्चे बोलते हैं– ''हम सब भी वादा करते हैं कि अपने हिस्से की थोड़ी– थोड़ी गुझिया गरीबों को अवश्य खिलाएँगे।''

बाबा चुटकी लेते हुए बोलते हैं– ''बोलो! दादी महारानी की जय।''

सब लोग बालते हैं– '' दादी महारानी की जय।''

प्रिया कहती हैं– ''दादी महारानी की जय।''

प्रिया कहती है – ''इस समय बाबा की वजह से ही गुझिया खाने को मिली है। 'बोलो बाबा महाराज की जय।''

सब लोग कहते हैं – ''बाबा महाराज की जय।''

– नई दिल्ली

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर,इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर,इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार –पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

मूर्खता

चित्रकथा-

मालिक, तेल के पीपे में चूहा गिर कर मर गया था..
..उसे बाहर फेंका कि नहीं, वरना ग्राहकों को गंध आएगी..
..मैंने उससे भी बेहतर किया..
क्या?
जी, मैंने उस चूहे को तेल के हर पीपे में बारी-बारी से डाल दिया..
ताकि उन सबमें एक सी गंध रहे, इससे ग्राहकों को पता नहीं चलेगा..

नन्हे नन्हे देश

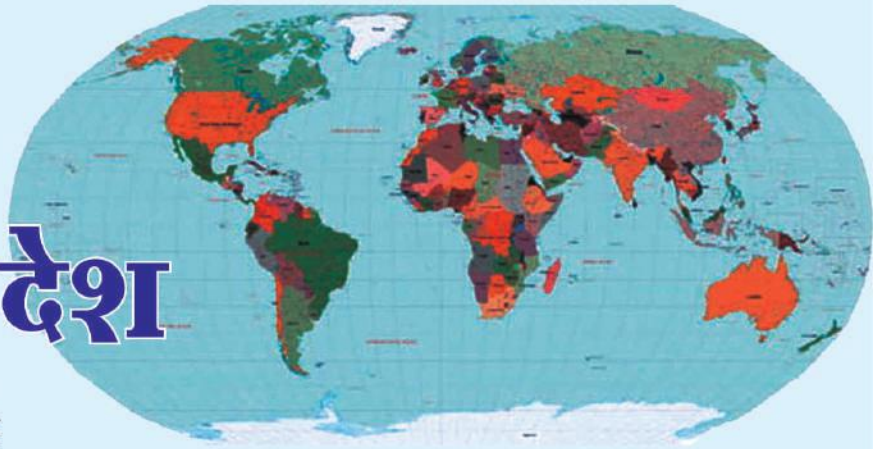

आलेख

श्रीधर बर्वे

कुछ अपवादों को छोड़कर आज विश्व में सब देश आजाद हैं। किसी भी देश की स्वतंत्रता की बड़ी पहचान है, उसका संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के योग्य होना। वर्तमान में इस वैश्विक संख्या के सदस्य देशों की संख्या १९३ है। संभव है– भविष्य में कुछ और उपनिवेशों के स्वतंत्र होने पर संख्या २०० होने तक पहुँच जाये।

स्वतंत्र देशों के आकर प्रकार में जमीन आसमान का अंतर है। क्षेत्रफल के आधार से विचार करें तो आज रूसी परिसंघ विश्व का सबसे बड़ा तथा वेटिकन सबसे छोटा है। यदि पहले की हाथी के रूप में कल्पना करें, तो दूसरा उसकी तुलना में चींटी से भी छोटा होगा। रूसी परिसंघ, कनाड़ा, चीन और संयुक्त राज अमेरिका में पूरी पृथ्वी के भू–भाग का लगभग ४० प्रतिशत समाहित है और शेष भू–भाग में सारे देश बसे हैं।

क्षेत्रफल और जनसंख्या के कारण बड़े देश चर्चित रहते हैं किन्तु छोटे नन्हे देश सामान्यतया अनदेखे रह जाते हैं। कोई देश छोटा, कितना छोटा हो सकता है, इतना छोटा हो कि कोई भी व्यक्ति सामान्य चाल से घूमते फिरते इसकी परिक्रमा एक घंटे के भीतर कर ले। हाँ, ऐसा भी देश है। क्या ऐसा भी कोई देश है जिसकी चारों सीमाओं की यात्रा किसी स्वचालित वाहन द्वारा आधे घंटे में पूरी हो जाये? हाँ, ऐसा भी देश है। और फिर ऐसे भी छोटे देश हैं, जो हमारे देश के प्रखंड या तहसील या जिले के बराबर हैं।

देशों का छोटापन कुछ भूगोल के कारण है, जैसे सागरों, महासागरों के नन्हें–छोटे द्वीप देश और कुछ ऐतिहासिक कारणों से महाद्वीपों में आबाद छोटे देश।

एशिया में सबसे छोटा देश हमारा पड़ोसी देश मालदीव है। छोटे छोटे १२०० प्रवाल द्वीपों का देश मालदीप हिन्द महासागर में बसा हुआ है। द्वीप की संख्या अधिक प्रतीत होते हुए भी कुल जमीन ३०० वर्ग किलोमीटर है तथा जनसंख्या लगभग तीन लाख। मालदीव की भाषा दिवेही है। इस देश की संस्कृति भारत, श्रीलंका तथा अरब से प्रभावित है। मत्स्य आखेट और पर्यटन इस देश के मुख्य उद्योग हैं। अध्यक्षीय शासन प्रणाली है। माले इसकी राजधानी का नाम है। १९६५ में ब्रिटेन से इस देश को आजादी प्राप्त हुई है।

एशिया का एक और छोटा देश भी द्वीपीय है। यह है सिंगापुर। मलाया प्रायद्वीप के धुर दक्षिणी कोने में स्थित सिंगापुर पहले मलाया के साथ ब्रिटेन का उपनिवेश था। ९ अगस्त, १९६५ को सिंगापुर स्वतंत्र गणराज्य बना। एक मुख्य बड़े द्वीप एवं ५० छोटे छोटे द्वीपों का यह गणराज्य विश्व के व्यस्त बन्दरगाहों में से हैं, और आर्थिक समृद्धि के मान से विश्व का पाँचवा तथा एशिया का प्रथम देश है। चीनी मूल के लोग प्रबल बहुसंख्यक हैं। मलय और भारतीय मूल के लोग भी अच्छी खासी संख्या में हैं। कुल जनसंख्या पचास लाख है। सिंगापुर नगर राजधानी है और क्षेत्रफल है ६१६.३ वर्ग किलोमीटर।

१८१९ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के सर टॉमस स्टेमफोर्ड रैफल ने सिंगापुर को बसाया था।

ब्रिटेन के अधीन रहते सिंगापुर को क्राउन कॉलोनी का दर्जा प्राप्त था, स्वतंत्र होने पर १९६३ में मलाया के साथ रहा किन्तु १९६५ में उससे पृथक हो गणराज्य बना।

छोटे देशों के संबंध में हिन्द महासागर पर ध्यान दें तो यहाँ कुछ और स्वतंत्र द्वीप देश है।

मालदीव के दक्षिण ११५ सुन्दर नन्हे नन्हे द्वीपों का देश 'सेशल्स' है। क्षेत्रफल में सेशल्स मालदीव से थोड़ा बड़ा है अर्थात कुल ३०८ वर्ग किलोमीटर भूमि है। आबादी लगभग एक लाख है। विक्टोरिया राजधानी है। १७६८ में फ्रांस तथा १८१४ में ब्रिटेन के आधिपत्य में रहने के बाद यह देश २९ जून १९७६ को स्वतंत्र हुआ। अफ्रीका, भारत, चीन और यूरोप के मूल जनों के मिश्रित रक्त का सेशल्स देश मिश्रित भाषा क्रियोल बोलता है। पर्यटन तथा मतस्य उद्योग अर्थव्यवस्था के आधार है। कुछ कृषि कार्य भी होता है।

अफ्रीका के दक्षिण पूर्व में विश्व का चौथा बड़ा द्वीप स्थित है जिसका नाम है मदागास्कर, इस विशाल द्वीप के उत्तरी छोर पर १८६२ वर्ग किलोमीटर की कुल भूमि के तीन द्वीप है जिन्हें कोमोरो कहा जाता है। ६ जुलाई १९७५ को इस देश ने फ्रांस से आजादी प्राप्त की। इसकी राजधानी का नाम मोरोनी है। कोमोरो के निवासी बांटू परिवार की कोमोस भाषा के साथ फ्रेंच और अरबी भाषा का उपयोग करते हैं। कुछ बड़े देश द्वीपों में कृषि कार्य होता है। किन्तु नगदी धन की फसलें लौंग, वनिला, यलांग (एक प्रकार का सुगन्धित पदार्थ) की फसलें लेते हैं। सात लाख की आबादी के देश की अर्थव्यवस्था में मत्स्य उद्योग की बड़ी भूमिका है।

कोमोरा के दक्षिण तथा मदागास्कर के पूर्व में लगभग बराबरी के दो द्वीप हैं– रियूनियन, मॉरिशस। रियूनियन अभी भी फ्रांस के अधिपत्य में है जबकि मारिशस एक स्वतंत्र गणराज्य। मॉरीशस द्वीप देश १९६८ तक ब्रिटिश उपनिवेश था। डॉ. शिवसागर राम गुलाम के नेतृत्व में से स्वतंत्र हुआ, मॉरीशस ऐसा देश है जहाँ भारतीय, अफ्रीकी, यूरोपीय और चीनी मूल के लोग मिलजुल कर रहते हैं तथा भारतीय मूलक बहुसंख्यक हैं। १३ लाख जनसंख्या के इस देश में आज भी हिन्दी, तेलुगु, तमिल, उर्दू और गुजराती जैसी भाषाएँ व्यवहार की जाती है। क्षेत्रफल २००० वर्ग किलोमीटर तथा राजधानी पोर्टलुई है।

यूरोप महाद्वीप में छोटे छोटे द्वीप देश हैं साथ ही महाद्वीप की मुख्य भूमि में भी हैं।

भूमध्य सागर में एक प्रसिद्ध फल के नाम से सदृश्य द्वीप देश है 'माल्टा'। चार लाख जनसंख्या और मात्र ३१६ वर्ग किलोमीटर की जमीन का देश माल्टा २१ सितम्बर १९६४ को ब्रिटेन की अधीनता से मुक्त हुआ। १९७४ में यह गणराज्य बना। वलेटा नगर इसकी राजधानी है। पथरीली और चट्टानी जमीन होने के कारण कृषि उद्योग के विकास के अवसर कम है। रबर, प्लास्टिक के उत्पादनों के निर्यात के अतिरिक्त जहाज निर्माण और उनकी मरम्मत का उद्योग अर्थव्यवस्था का दृढ़ता दे रहा है। इनके अलावा पर्यटन भी बड़ा उद्योग है। माल्टा निवासी अपनी भाषा माल्टीज के साथ अंग्रेजी का भी इस्तेमाल करते हैं।

यूरोप की मुख्य भूमि पर कई छोटे छोटे देश स्थित है। भूमध्य सागर तट पर फ्रांस के दक्षिण में एक बहुत ही छोटा सा राज्य है 'मोनाको'। यह एक राजतंत्रीय देश है। इसका क्षेत्रफल २ वर्ग किलोमीटर से कम १.९५ वर्ग किलोमीटर है। वर्ष १४१९ से यह स्वतंत्र देश अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। कुल जनसंख्या ३३ हजार है, जिसमें फ्रांसीसी, इतालवी और ब्रिटिश मूल के लोग हैं। तम्बाकू, पर्यटन, उद्योगों के साथ साथ जुए का खेल भी उद्योग की भांति चलता है। राज्य को शासन चलाने में सहायता देने के लिए एक परिषद् होती है। मोनाको की अर्थव्यवस्था का आधार पर्यटन, कुछ रासायनिक उद्योग हैं। यह देश संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य है।

फ्रांस और स्पेन की सीमाओं पर पिरेनीज पर्वत की गोद में आबाद सन् १२७८ से एक स्वतंत्र देश है – 'एण्डोरा'। पूर्वी पिरेनिज की सुंदर घाटी में ४६८ वर्ग किलो मीटर और लगभग ८५ हजार की जनसंख्या का एण्डोरा पहले स्पेनी उर्जेल के बिशप तथा फ्रेंच फोइक्स के संयुक्त अधिराज्यत्व में शासित होता था। वर्ष १९९३ में एण्डोरा का नया संविधान लागू हुआ। उसके अनुसार इस देश में २८ सदस्यों की एक संसद है। शासन व्यवस्था संसदीय लोकतंत्र है। एण्डोरा की अर्थव्यवस्था कृषि एवं पर्यटन पर आधारित है। एण्डोरा में फ्रेंच भाषा के अतिरिक्त कैटेलन और कोस्टीलियन भाषाएँ भी प्रचलित हैं। यह देश संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य है।

यूरोप का क्रीड़ांगन कहे जाने वाले देश स्विट्जरलैंड और आस्ट्रिया के मध्य ऊपरी राईन नदी के तट पर पूर्व से पश्चिम तक ९ किलोमीटर चौड़ा और उत्तर से दक्षिण तक २४ किलोमीटर लंबा, कुल १६४ वर्ग किलोमीटर का देश लिकटेंस्टाइन स्थित है। यह नन्हा सा राजतंत्रीय देश २३ जनवरी १७१९ से स्वतंत्र है। कुछ उद्योगों, बैंकिंग केन्द्रों तथा पशुपालन पर इस देश की अर्थव्यवस्था आधारित है।

नन्हा सा एक ऐसा भी देश है जो विश्व का सबसे प्राचीन गणतंत्र है। ३ सितम्बर ३०१ से सन् मेरिनो, जो पूरी तरह चारों और इटली की सीमाओं से घिरा हुआ है, एक स्वतंत्र गणराज्य है। देश की राज्य व्यवस्था अत्यंत लोकतान्त्रिक है, वहाँ एक साथ दो राष्ट्र अध्यक्ष छः महिनो के लिए निर्वाचित होते हैं, अर्थात् एक वर्ष में चार राष्ट्र अध्यक्ष होते है। राष्ट्र अध्यक्ष वहाँ रीजेंट कहे जाते हैं, जिनको देश की जनरल कोंसिल के ६० सदस्य निर्वाचित करते हैं। कौंसिल के सदस्य देश के नागरिक पाँच वर्षों के लिए चुनते हैं।

उत्तरी इटली में माउन्ट टिटानों के ढाल पर स्थित सन मेरिनों का क्षेत्रफल केवल ६१ वर्ग किलोमीटर एवं जनसंख्या ३१ हजार है। पर्यटन और कृषि इस नन्हे से देश की अर्थव्यवस्था के मुख्य स्रोत है। चर्म उद्योग, सुंदर डाक टिकटों तथा ऊनी वस्त्रोद्योग भी देश के राजस्व के अन्य स्त्रोत है। कहा जाता है कि जब इटली में १९वीं शताब्दी के मध्यवर्ती वर्षों में गृह युद्ध चल रहा था तब संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने सॅन–मेरिनो को प्रस्ताव किया था कि इस अशांत समय में वह अपना क्षेत्र विस्तार करना चाहे तो अमेरिका सहायता करने के लिए तैयार है। सन मेरिनो ने राष्ट्रपति लिंकन को शिष्टातापूर्वक उत्तर दिया कि वह अपने वेतनमान भू क्षेत्र से ही संतुष्ट है। ऐसा माना जाता है जनश्रुतियों के आधार पर कि अंटार्कटिक सागर तट से केवल २० किलोमीटर दूर इस छोटे से गणराज्य की स्थापना एक संगतराश ने की थी। वर्ष १८६२ की एक संधि द्वारा इटली तथा सन–मेरिनों मैत्री तथा पारस्परिक सहयोग के बंधन से आबद्ध है। यह देश भी संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य है।

क्षेत्रफल और जनसंख्या के प्रमाण से दुनिया का सबसे छोटा देश है– ''वेटिकन सिटी''। जो इटली की राजधानी रोम नगर का एक भाग है। केवल ०.४ वर्ग किलोमीटर तथा ८०० की आबादी के इस स्वतंत्र देश के राज्याध्यक्ष 'पोप' है। ११ फरवरी १९२९ की एक संधि के अनुसार इटली सरकार ने यह व्यवस्था की है कि धर्मगुरु स्वतंत्रता पूर्वक अपने विश्वव्यापी कैथलिक मत के अनुयायियों की धार्मिक क्रियाकलापों की व्यवस्था कर सकें। विश्वभर के अनुयायियों से प्राप्त दान, चंदा और सहयोग राशि से इस धर्म देश की अर्थव्यवस्था संचालित होती है।

मोनाको, एण्डोरा, लिकटेंस्टाइन, सन मेरिनो और वेटिकन सिटी यूरोप के मुख्य देश हैं जिनकी यात्रा कोई भी व्यक्ति पैदल या सायकल से कुछ देर में ही पूरी कर सकता है, लेकिन कैरिबियन सागर तथा प्रशांत महासागर में भी छोटे–छोटे देश स्थित है जो द्वीप अथवा द्वीपों के समूह है। इनका छोटा होना प्राकृतिक है।

– इन्दौर (म.प्र.)

नव संवत्सर के स्वागत में

संवाद

डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

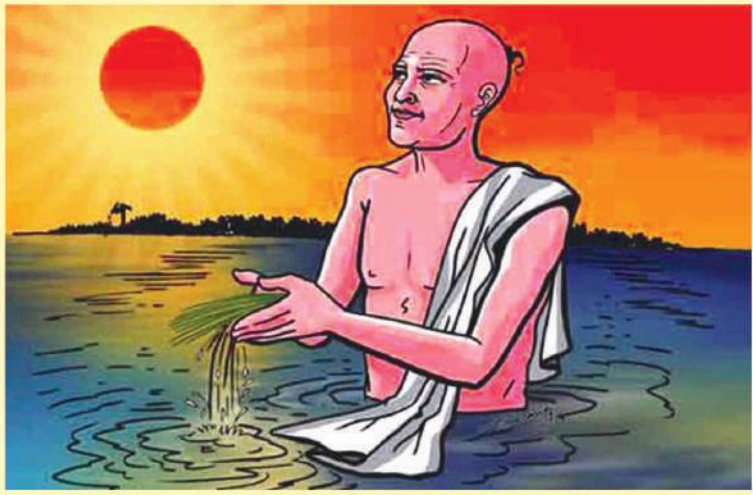

हमारा नव संवत्सर २०७७ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तद्अनुसार २५ मार्च २०२० मंगलवार राष्ट्रीय शाके १९४२ आरम्भ हो रहा है। हमारी कामना है कि इस शुभ अवसर पर विश्व के सभी व्यक्ति सुखी, समृद्ध, स्वस्थ एवं निरोग रहें। सभी जन मानस का कल्याण एवं मंगल हो, संसार में किसी को कष्ट एवं दुखद संताप की अनुभूति न हो। पृथ्वी, आकाश, समस्त नक्षत्र मंडल, जलवायु, वनस्पति, दैवीय शक्तियाँ इस भूमण्डल के लोगों के लिए अनुकूल, प्रेरक, शांति समृद्धि एवं बुद्धि प्रदाता हो।

हमारे संवत्सर का चैत्र से आरम्भ मानने के संबंध में ऐसी मान्यता है कि ईश्वर ने इसी दिन सृष्टि की रचना की– ''चैत्र मासे जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्ल पक्ष समग्रंतु तथा सूर्योदय सति ब्रह्मपुराण के अनुसार चैत्रमास के शुक्ल पक्ष के पहले दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा जी ने इस सृष्टि की रचना की। भारत में संवत्सर आरम्भ होने की तिथि में कहीं कहीं अंतर मिलता है। उत्तर भारत में इसका प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा है वहीं गुजरात महाराष्ट्र, दक्षिणी पश्चिमी प्रांतों में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। संवत् संवत्सर का अपभ्रंश रूप है। सम्+वस्ति+ऋतवः अर्थात् जिस समय अच्छी ऋतु का आभास होता है, उस काल गणना के प्रमाण को संवत्सर कहते हैं। चैत्र मास को मधुमास भी कहते हैं क्योकि यह सब महीनों की अपेक्षा अधिक सुन्दर, सम मौसम युक्त, अधिक उत्साहवर्धक, उल्लास पूर्व एवं सुखद होता है। इसलिए काल गणना (संवत्) भी इसी से मानना उचित प्रतीत होता है।

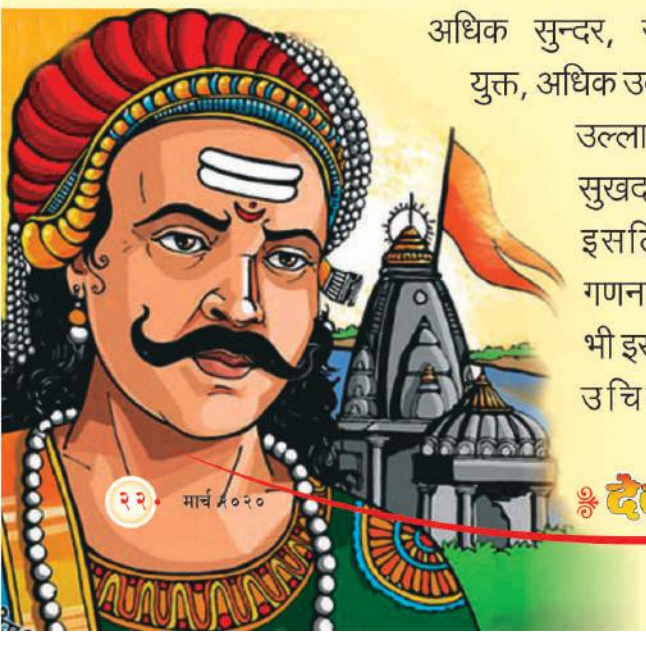

भारतीय संवत् सब प्रकार के तिथि–दर्शकों (केलैण्डरों) में अपना अलग अलग विशिष्ट स्थान रखता है। यह हमारे स्मृति ग्रंथों के रचयिता ऋषि, महार्षियों के सूक्ष्म चिन्तन, मनन एवं वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर माना गया है। 'इंदमित्थं' सिंद्धांत के आधार पर की गई काल गणना से हमारा संवत्सर विश्व में सर्वश्रेष्ठ एवं निर्दोष माना जाता है। हमारे संवत्सर में महीनों के नाम भी नक्षत्रों के आधार पर रखे गये हैं जैसे चैत्र, वैशाख आदि। चंद्रमा इन नक्षत्रों से गुजरते समय पूर्णिमा को जिस नक्षत्र में होता है उसी के नाम पर माह का नाम रखा जाता है।

भारत में संवत्सर की काल अवधि पृथ्वी के चारों ओर चन्द्रमा के चक्कर लगाने की अवधि साढे २८ दिन (चन्द्रमास) तथा सूर्य के चारों ओर पृथ्वी द्वारा चक्कर लगाने की अवधि ३६५ १/४ दिन (सौर वर्ष) के समन्वय से निर्धारित की गयी है। इसीलिए हमारे सभी पर्व, उत्सव, संस्कार आदि अपने अपने निश्चित समय पर आते हैं। अंग्रेजी कैलेण्डर (सन्) में इसको निर्धारित करने में सूर्य की गति को प्रमाण मानते हैं जो कि उचित प्रतीत नहीं होती क्योंकि सूर्य की गति के अनुसार प्रति वर्ष एक पल का अन्तर बढ़ता जाता है, जो कि ३६००० वर्षो में १० दिन और कलियुग पूर्ण होते हुए १२० दिन हो जायेगा। समय की इस अवस्था में जून का महिना गर्मी के स्थान पर शरद् ऋतु में तथा दीपावली और दशहरा ग्रीष्म काल में हुआ करेंगे। मुस्लिम सम्प्रदाय में प्रचलित 'हिजरी' सन् चन्द्र वर्ष पर आधारित है जो कि हमारे सौर वर्ष से ११ दिन एक घंटा

२०मिनट १२ सैकेण्ड छोटा है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा एक किलोमीटर प्रति सैकेण्ड की दर से साढ़े २८ दिन पूरी कर लेता है। इस प्रकार भारतीय वर्ष मुस्लिम वर्ष में अन्तर होने के कारण उनके पर्व रमजान, ईदुल फितर आदि एक निश्चित ऋतु में नहीं आ पाते। भारत में विक्रम संवत् के अतिरिक्त कहीं कहीं शक् संवत् का भी प्रयोग दिखाई देता है। यह संवत् ईसा से ७८ वर्ष बाद आरम्भ हुआ। इसे शक वंश के शासकों ने चलाया। शक द्वीप के ब्राह्मण ज्योतिषी ईसा की पहली शताब्दी से इसका प्रयोग करते थे।

भारतीय संवत् को पंचांग (केलैण्डर) के स्वरूप में व्यक्त किया जाता है। क्योंकि इसे तिथि, वार, पंचांग, नक्षत्र, योग एवं करण इन पाँच अंगों में विभाजित किया गया है। पंचांग के ये पांचों अंग वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर बनाये गये हैं। सूर्य, चन्द्र आदि नक्षत्रों के मध्य से गुजरने पर जो स्थिति बनती है उसी के आधार पर इनका नामकरण, स्वरूप और अवधि निश्चित की जाती है। उदाहरण के लिए चन्द्र की स्थिति के अनुसार माह को कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष को १५-१५ तिथियों में विभक्त किया गया है। जब चन्द्रमा और सूर्य एक ही स्थान पर ० डिग्री पर होते है तब अमावस्या होती है। इसी प्रकार सम्पूर्ण नभ मण्डल में भिन्न भिन्न आकार के तारा समूह दिखाई देते है इन्हें २७ भागों में विभक्त कर नक्षत्रों का नाम दिया गया है। दिनों के नाम भी इसी प्रकार दिये गये हैं। सूर्य का उदय सर्व प्रथम होने से रविवार को सप्ताह का प्रारम्भ मानते हुए क्रमशः चन्द्र, मंगल आदि की स्थिति के आने पर सात दिनों का नामकरण किया गया है। करण पंचांग में एक दिन के आधे भाग को प्रदर्शित करते हुए कुल ग्यारह की संख्या में बताये गए हैं।

भारतीय संवत्सर के विशद रूप में अन्तरिक्ष में अवस्थित ग्रहों आदि की गति की सूक्ष्मता और सुनिश्चितता के आधार मौसम की भविष्य वाणी, देश-विदेश की आर्थिक एवं सामाजिक घटनाओं तथा मानवों के जीवन संबंधी भविष्य की स्थिति का आकलन किया जाता है।

भारत में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टि की रचना के अतिरिक्त अन्य कारणों से भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। 'स्मृतकौस्तुम' के अनुसार भगवान विष्णु ने इसी दिन मत्स्य अवतार लिया। पराक्रमी विक्रमादित्य ने इसी दिन २०७७ वर्ष पहले विजय के उपलक्ष्य में संवत्सर की स्थापना की। दयानंद स्वामी ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की। इसी दिन राम का राज्याभिषेक तथा युधिष्ठिर का राज्य अभिषेक हुआ। एकता और ज्ञान के प्रतीक झूलेलाल की आराधना में सिंधी लोग चेटि चण्ड का उत्सव मनाते हैं। समाज और राष्ट्र के समुन्नायक डॉ. केशवराव हेडगेवार का इसी दिन जन्म हुआ। पारसी लोगों का नवरोज पर्व भी इसी दिन आरम्भ होता है। अतः हमें भी इस दिन को पूजा अर्चना, हवन आदि से महत्वपूर्ण बनाना चाहिए।

- संगरिया (राज.)

।। श्रद्धाजंलि ।।

हिन्दी-सेवी और प्रकाशन क्षेत्र के पुरोधा श्री श्यामसुन्दर जी का निधन

प्रभात प्रकाशन के संस्थापक श्री श्यामसुन्दर जी का ९२वर्ष की आयु में देहांत हो गया। उन्होंने जीवन भर राष्ट्रवादी एवं प्रेरणादायी साहित्य का विपुल प्रकाशन किया और वह भी ऐसा साहित्य, जो न केवल नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, बल्कि समाज जीवन व राष्ट्र जीवन में आदर्शों की भी स्थापना करता है। वे एक प्रखर हिन्दी-सेवी के रूप में सदैव याद किए जाएँगे।

सन् १९५८ में उन्होंने दिल्ली में प्रभात प्रकाशन की नींव रखी और धीरे-धीरे प्रभात प्रकाशन हिन्दी साहितय में एक विशिष्ट नाम बनकर उभरा। १९९५ में उन्होंने अटलबिहारी वाजपेयी के मार्गदर्शन, पं. विद्यानिवास मिश्र जी के नेतृत्व एवं तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा की प्रेरणा से साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य अमृत' का प्रकाशन प्रारंभ किया, जिसकी आज दस हजार से भी अधिक प्रसार संख्या है।

अपनी मृत्यु के अंतिम दिन तक वे आसफ अली रोड़ स्थित अपने कार्यालय में काम कर रहे थे, जो उनके सच्चे कर्मयोगी होने को सिद्ध करता है।

बिन्दु मिलाओ- रंग भरो

● राजेश गुजर

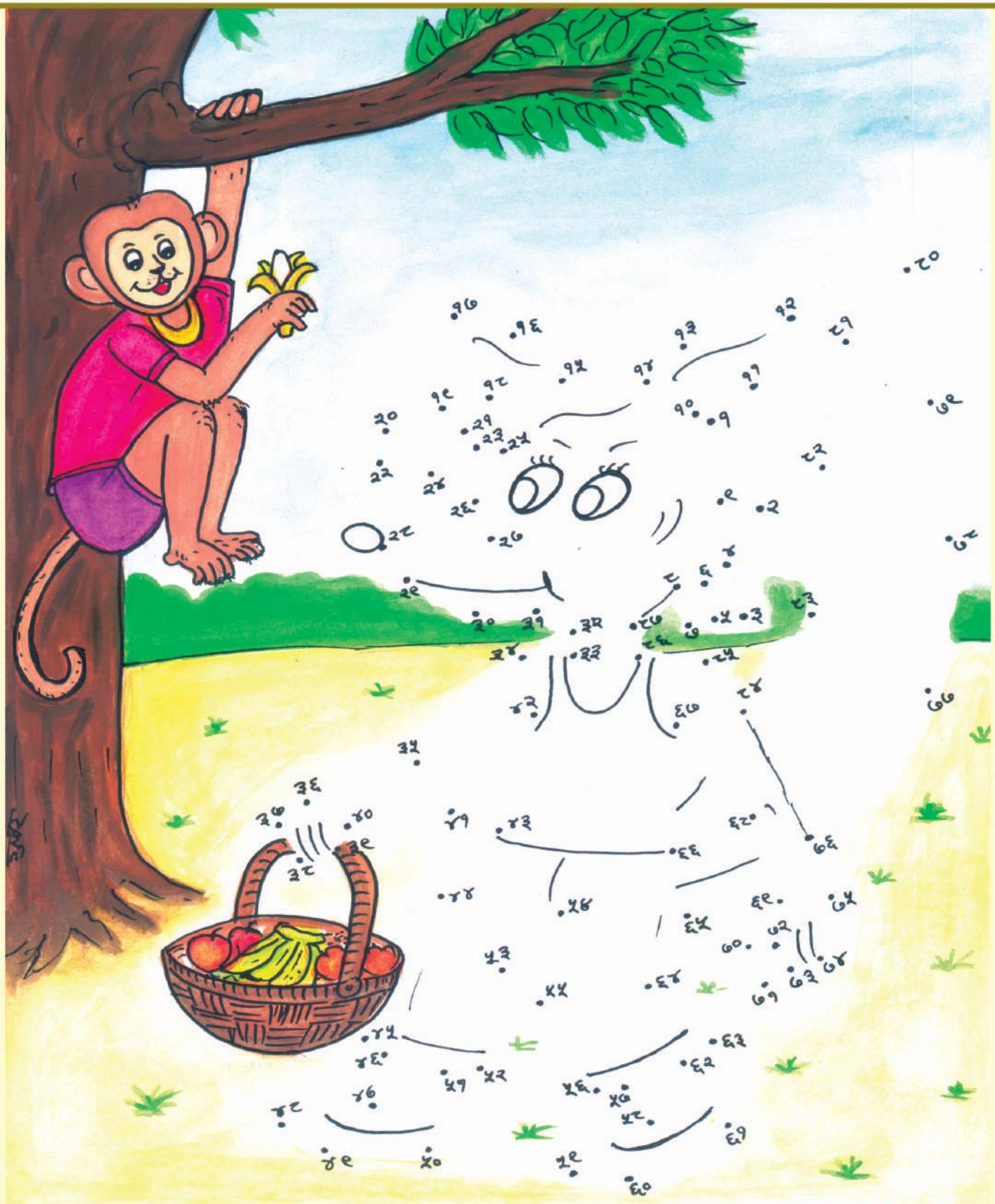

रानी अवन्ती बाई का बलिदान

लघु आलेख

भूपिन्दर सिंह आशट

हमारे देश में वीर सपूतों की परम्परा कोई नई नहीं है। शुरु से ही देशभक्तों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने का कार्य किया है।

भारत में अंग्रेज व्यापार करने के लिए आए, पर अंत में वे यहाँ अपनी सत्ता स्थापित कर बैठे। पर जब उनके अत्याचारों का घड़ा भर गया, तो उनके विरुद्ध एक क्रांति ने जन्म लिया, जिसे हम १८५७ की क्रांति तथा भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहते हैं।

यह क्रांति बैरकपुर छावनी से प्रारंभ होकर मेरठ, दिल्ली, लखनऊ, झांसी, बिहार के साथ ही मध्यप्रदेश में भी पहुँची। जबलपुर में गोंड वंश के राजा संग्राम शाह को उनके पुत्र रघुनाथ शाह के साथ अंग्रेजों ने तोप के गोलों से उड़ा दिया। इस पर रामगढ़ रियासत (मंडला क्षेत्र) की रानी अवन्ती बाई क्रोधित हो उठीं। अंग्रेज उन्हें भी राज्य से वंचित कर चुके थे अर्थात् उनका राज्य छीन चुके थे।

रानी अवन्तीबाई ने अनेक क्रांतिकारियों को साथ लेकर क्रांति का आह्वान कर दिया। रानी का दमन करने आये अंग्रेज अधिकारी कैप्टन वाडिंगटन को रानी ने धराशायी कर दिया। बाद में स्थिति कमजोर होने पर उन्होंने जंगलों में छिपकर मुकाबला किया, पर जब उनका पकड़ा जाना तय हो गया, तो उन्होंने देश की गौरवशाली परम्परा का निर्वाह करते हुए साहस के साथ स्वयं को कटार मारकर २० मार्च, १८५८ को आत्मोत्सर्ग कर लिया।

रानी अवन्तीबाई की पुण्य स्मृति में २० मार्च १९८८ को सरकार द्वारा डाक टिकट जारी किया गया। रानी अवन्तीबाई का बलिदान निश्चित रूप से हम सभी के लिए गौरव का विषय है।

– मंडला (म.प्र.)

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा खेलकूद के माध्यम से हो रहा युवा निर्माण

सूर्या फाउण्डेशन एक सामाजिक संस्था है जो विभिन्न विषयों पर चिंतन, मनन और शोध वेफ लिए समर्पित है। संस्था अपने अनेक आयामों जैसे– थिंक–टैंक, स्कूल भारती ऑर्गेनाइजेशन, प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग, आदर्श गाँव योजना आदि वेफ माध्यम से पिछले 25 वर्षों से समाज व राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे रही है।

मा. प्रधानमंत्री जी का कहना है कि खेल–भावना जीवन में सफलता का आधार है क्योंकि कहा जाता है 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' खेलकूद से युवा जीवन में आने–वाली समस्याओं का सामना करने में सक्षम होते हैं।

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष भारत यूथ क्लब के युवाओं की खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। जिसमें लाखों युवा भाग लेते हैं। सूर्या फाउण्डेशन के कार्ययुक्त गाँव और उसके निकटवर्ती 10 गाँव को जोड़कर प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। सभी प्रतियोगिताएँ ओपन टूर्नामेंट के आधार पर होती है। इस वर्ष यह प्रतियोगिता प्राकृतिक चिकित्सा दिवस (18 नवंबर से युवा दिवस 12 जनवरी) तक आयोजित की जा रही है। जिसमें 18 राज्यों में 1600 गाँव के 1 लाख युवा भाग ले रहे हैं। 250 स्थानों पर समापन कार्यक्रम किये जायेंगे जिसमें 15000 खिलाड़ियों को मेडल व प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया जायेगा।

प्रत्येक गाँव से खेल में रुचि लेने वाले युवा, रिटायर्ड अधिकारी मिलकर खेल समिति का निर्माण करते हैं। इसमें साई, क्रीड़ाभारती तथा नेहरू युवा क्लब आदि का भी सहयोग लेते हैं। खेलकूद प्रतियोगिता 7 दिनों की होती है। समापन पर स्थानीय जनप्रतिनिधि ग्राम प्रधान को भी खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन एवं पुरस्कार वितरण हेतु बुलाते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से प्रशासन, फायर सर्विस, डॉक्टर्स का भी सहयोग लेते हैं। जज, रेफरी व खेल के नियम स्थानीय समिति निर्धारित करती है।

सूर्या फाउण्डेशन इस तरह युवाओं के जनजागरण का कार्यक्रम पूरे भारत में कर रहा है। सामाजिक कार्यकर्ताओं, क्षेत्र के प्रबुद्ध जनों, संतों का मार्गदर्शन युवा पीढ़ी को मिलता है। जहाँ एक ओर भारत का युवा गलत आदतों एवं सामाजिक कार्यों से दूरी बना रहा है, वहीं सूर्या फाउण्डेशन भारत यूथ क्लब के द्वारा युवाओं को गाँव में सामाजिक गतिविधियों, परिवार व समाज के विभिन्न पहलुओं से जोड़ने का काम कर रहा है। खेलकूद प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के खेल के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण एवं उनके विचारों में परिवर्तन किया जाता है।

भरतराज
(इंचार्ज, खेलकूद प्रतियोगिता)

ये हैं आपदाएं

मानव जीवन को सरल और उपलब्ध शक्तियों को उपयोगी बनाने में विज्ञान शामिल रहा है। उसी की मदद से इंसान अपनी आपदाओं को पहचान पाया है।

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

सुनामी- महासागरों के भीतर आए भूकम्प अक्सर पानी में इतनी भारी उथल-पुथल पैदा करते हैं कि महासागरों के किनारे बसे शहर और बस्ती भारी दुष्परिणाम भोगते हैं और पानी उन्हें अपने में समेट लेता है।

भूकम्प- पृथ्वी कई सतहों में है और ये महाद्वीप अलग-अलग सतहों के रूप में पृथ्वी के महासागरों पर तैर रहे हैं। जब ये सतह एक-दूसरे से टकराती है तो भूमि के उस हिस्से के ऊपर तक भारी कम्पन होता है, जो इंसान के लिए आज भी छिपा खतरा है।

बाढ़- बेहिसाब बरसात होना बाढ़ की स्थिति बना देता है। अत्यधिक पानी जब तेजी से बहते हुए अपना रास्ता बनाता है तो रास्ते में आने वाली हर चीज खिलौना बन जाती है।

चक्रवात- हवा के दबाव के साथ ठंडी-गर्म हवाओं के उतार-चढ़ाव और टकराहट से अक्सर चक्रवात का जन्म होता है लेकिन इसके दायरे में अगर इंसान और उसकी बनाई कोई चीज आ जाए तो वह खतरे में पड़ जाती है।

ज्वालामुखी– पृथ्वी के बनने से अब तक पृथ्वी पर ढेरों ज्वालामुखी फटे हैं। ज्वालामुखी के लावा और विस्फोट के जरिए पृथ्वी के भीतर की गर्मी बाहर निकलती है पर यह इंसानों के लिए आज भी संकट है और शोध के लिए अजूबा भी।

आग– भारी रिहायशी इलाकों में जब कभी भी भीषण अग्निकांड होता है तो आग से पैदा खतरे पता चलते हैं और आग की विध्वंसक ताकत का पता चलता है।

प्रदूषण– मानवीय सुविधाओं को पाने के जोश में पृथ्वी पर जिस तरह से औद्योगिक व्यवस्थाएं हो रही हैं उससे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। सामान्य रूप से धूल, धुएं, कार्बन से मुक्त स्वच्छ हवा और पानी का मिलना भी दूभर हो रहा है पर ये आपदा इंसान के विकास का ही परिणाम है।

जंगल की आग– पर्यावरण की बेहतरी के लिए पेड़ों से भरे जंगल की आज भी बेहद जरूरत है पर इंसानी गलतियों और सूर्य के प्रकोप से जब जंगल में भारी आग लगती है तो वह अकल्पनीय भीषण भी हो जाती है क्योंकि ना तो बहुत बड़े नुकसान होने तक इसका पता चलता है ना ही अग्निशामक संसाधनों की जंगलों के बीच कोई व्यवस्था हो पाती है।

एक्सीडेंट (दुर्घटना) एवं रोग –

तेज गति, जंक फूड का प्रयोग, शारीरिक श्रम का अभाव वे सामान्य वजहें हैं जो इंसान के जीवन में सावधानी हटी, दुर्घटना घटी को सत्यापित कर रहे हैं। ये आपदाएं इंसान की खुद की भूलों का ही दुष्परिणाम बनती रही हैं।

समाप्त

ट्यूशन का मायाजाल

कहानी

डॉ. फकीरचंद शुक्ला

रोहन कई दिनों से जिद कर रहा था। उसकी कक्षा के सभी बच्चों ने ट्यूशन रख ली थी। मगर उसके पिताजी मान ही नहीं रहे थे।

''तुम्हें किसने भ्रम में डाल दिया कि ट्यूशन रखने से पढ़ाई होती है?'' उसके पिताजी का तर्क था। मगर रोहन अलग ढंग से सोचता था, उसने कहा– ''पिताजी! बच्चे ने ट्यूशन रखकर पाठ्यक्रम पूरा कर लेते हैं... कक्षा में तो फटाफट पाठ पढ़ा देते हैं।''

आखिरकार पिताजी को उसकी बात माननी ही पड़ी थी। वह रोहन को साथ लेकर एक शिक्षक के घर गए थे। जो भौतिकी की ट्यूशन के लिए प्रसिद्ध था।

मगर वहाँ तो जैसे पूरी कक्षा लगी हुई थी। उस शिक्षक के घर के आगे कई साइकिल तथा स्कूटर खड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ काफी संख्या में बच्चे पढ़ते होंगे।

दो–तीन बार घंटी बजाने पर एक मोटा सा व्यक्ति बाहर आया– ''कहिए।''

''जी हमें प्रोफेसर चन्द्र से मिलना है।'' रोहन के पिताजी ने कहा।

''मैं ही प्रो. चन्द्र हूँ। अगर बच्चे ने ट्यूशन पढ़नी है तो उसे सुबह की पारी में भेज दीजिएगा। सात सौ रुपए शुल्क लगेगा।'' एक ही सांस में सारी सूचना देकर प्रो. चन्द्र भीतर चले गए थे।

रोहन के पिताजी तो हैरानी से उन्हें देखते ही रहे। यह कैसा प्रोफेसर है जिसे बात करने की भी सभ्यता नहीं।

खैर, रोहन ने ट्यूशन रख ली।

सुबह की पारी में रोहन प्रो. चन्द्र के यहाँ भौतिकी पढ़ने जाया करता और शाम को विद्यालय से छुट्टी होने पर कहीं और गणित की ट्यूशन पढ़ने चला जाता। दोनों प्रोफेसर के घर उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव की तरह थे। प्रत्येक प्रोफेसर के घर आने जाने के लिए ही आधे पौने घंटे से अधिक समय लग जाता था।

प्रातः उठते ही एकदम से तैयार होकर रोहन को भौतिकी की ट्यूशन पढ़ने के लिए भागना पड़ता तथा वहाँ से लौटकर एकाध रोटी खाता कि विद्यालय जाने का समय हो जाता।

शाम को विद्यालय से लौटने पर मुश्किल से थोड़ी देर के लिए आराम करके चाय–दूध पीता कि गणित की ट्यूशन का समय हो जाता।

रोहन का खेल–कूद, टी.वी देखना आदि सब कुछ छूट गया था। मगर पश्चाताप इस बात का था कि इतनी भाग दौड़ करने के पश्चात भी प्राचार्य जी की ओर से उसके पिताजी को शिकायतें मिलने लगी थी कि रोहन गृहकार्य नहीं करता। रोहन भी विवश था अगर वह गृहकार्य करेगा तो ट्यूशन का काम कैसे कर पाएगा? और अगर ट्यूशन का काम नहीं करेगा तो वहाँ अगला पाठ समझ पान कठिन हो जाएगा।

त्रैमासिक परीक्षाएँ शुरु हो गई थीं। रोहन को कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या करे। विद्यालय की ओर से पहली चार इकाईयाँ में से परीक्षा होनी थी मगर ट्यूशन वाले शिक्षक तो आठवीं इकाई की तैयारी करवाने में लगे हुए थे।

परिणाम वहीं निकला जिस की

रोहन को आशंका थी। वह दो विषयों में अनुतीर्ण हो गया। विद्यालय में सहपाठियों में उसका जो अपमान होना था, वह तो हुआ ही मगर पिताजी का कोपभाजन भी बनना पड़ा था– ''कोई लाज शर्म है तुम्हें या नहीं? हर महीने चौदह सौ रुपये तुम्हारी ट्यूशन की भेंट चढ़ जाते हैं। अगर यही गुल खिलाने हैं तो क्या आवश्यकता है पैसे बर्बाद करने की?''

...और इधर प्राचार्य जी ने उसके पिताजी को विद्यालय में बुलवा कर मानों आग में घी का काम किया था।

प्राचार्य जी ने उसके पिताजी को जैसे चेतावनी दे डाली थी– ''आपका बेटा पढ़ाई में बहुत पिछड़ रहा है। अगर छःमाही परीक्षा में भी अनुतीर्ण हो गया तो विवश हो मुझे इसका प्रवेश निरस्त करना पड़ेगा। हमें अपने विद्यालय के परिणाम का सत्यानाश नहीं करना है।'' उन्होंने तो रोहन के पिताजी से लिखवा भी लिया था कि अगर छःमाही परीक्षा में रोहन के अच्छे अंक नहीं आए तो प्राचार्य जी उसका प्रवेश रोक सकेंगे।

पिताजी का परेशान होना स्वाभाविक था ही मगर लिखित रूप में देने पर रोहन के मन में एक भय सा समा गया था। अगर उसके अंक कम आए तो शिक्षक ने उसको प्रवेश नहीं देंगे। उसका एक वर्ष भी नष्ट हो जाएगा और सभी उसे अयोग्य भी समझने लगेंगे।

हर पल अकारण तनाव के कारण रोहन का स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगा था। उसकी भूख तो जैसे मर गई थी। ट्यूशन के कारण उसका खेल कूद तो पहले ही बंद हो चुका था। वह रह पल खोया–खोया रहने लगा था।

आज जब रोहन विद्यालय से लौटा तो घर में अपने मनोहर काका को देखकर खुश हो गया। काका जी बैंगलुरु में एक बड़ी कम्पनी में इंजीनियर हैं। काका उसके लिए कई ज्ञानवर्धक पुस्तकें और खेल लेकर आए थे।

मगर पुस्तकें पढ़ना और खेल खेलना तो एक ओर रहा, रोहन तो उनके साथ अधिक समय बातचीत भी नहीं कर सकता था। उसे ट्यूशन पढ़ने जो जाना होता था।

आखिर दो दिन बाद काका जी ने उससे पूछ ही लिया– ''भाई रोहन! तुम्हें हर पल भाग–दौड़ क्यों लगी रहती है? इतने दिन में कभी आराम से तुमने मुझसे दो पल बात भी नहीं की।''

''काकाजी! मैं भी क्या करूँ समय ही बहुत कम मिलता है।'' वह बोला।

''क्या तुम कोई खेल खेलने जाते हो?''

''नहीं काका जी...''

''तो फिर...? काकाजी ने आश्चर्य से पूछा।

''काकाजी! प्रतिदिन सुबह तथा शाम को मुझे ट्यूशन पढ़ने जाना होता है...और बाकी सारा दिन तो विद्यालय में ही बीत जाता है।'' रोहन ने मानो स्पष्टीकरण दिया।

''क्या तू ट्यूशन पढ़ता है?''

''हाँ काका जी!''

काका जी तो जैसे आश्चर्यचकित हो गए थे– ''क्या तुम्हारे विद्यालय में शिक्षकगण तुम्हें नहीं पढ़ाते?''

''वे तो पढ़ाते है काकाजी! मगर हम उनकी ओर अधिक ध्यान नहीं देते।'' रोहन ने वास्तविक बात कह दी।

''वह क्यों भाई?''

''काका जी! ट्यूशन वाले शिक्षक तीन चार महीने में ही पूरा पाठ्यक्रम पूरा कर देते हैं...बाद में हम स्वयं ही पुनरावृत्ति करते रहते हैं।''

''ना, जल्दी पाठ्यक्रम करके तुम लोगों ने कौन सा हिमालय पर्वत पर चढ़ना है?'' काका जी ने थोड़ा विनोद के स्वर में कहा– ''बेटे! हमने तो कभी ट्यूशन नहीं रखी और न ही हमारे समय में यह कुरीति होती थी। बेटे! ट्यूशन पढ़ने से कभी कोई मेधावी नहीं बन सकता। किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए सच्ची लगन तथा अनथक परिश्रम की आवश्यकता होती है। ट्यूशन तो हमारी शिक्षा पद्धति को दीमक की तरह चाट रही है।''

''मगर काका जी! आजकल तो सभी विद्यार्थी ट्यूशन रखते हैं। बिना ट्यूशन रखे तो कोई भी नहीं पढ़ पाता।'' रोहन ने आजकल की वास्तविकता से अवगत कराया।

''बस यही तो हमारी गलत धारणा है बेटे...! हम मेहनत करने की बजाए रेडीमेड खाने के आदी हो चुके हैं। ट्यूशन पढ़ाने वाले टीचर तुम लोगों को नोट्स बना कर दे देते हैं और तुम लोग उन्हें रट्टा चढ़ा लेते हो। इस प्रकार तो तुम कभी भी विषय की गहराई तक नहीं पहुँच पाओगे। बेटे! मोती प्राप्त करने के लिए समुद्र के तल तक पहुँचना पड़ता है।''

काका जी की बातें जैसे रोहन को प्रभावित कर रही थीं। उसके मन में मानो कुछ हलचल सी होने लगी थी।

''बेटे! मैंने कभी भी ट्यूशन नहीं रखी और न ही कभी मेरे किसी मित्र ने रखी थी। मगर फिर भी हमेशा विश्वविद्यालय में अच्छा स्थाान प्राप्त करते थे।''

रोहन काका जी की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहा था।

''बेटे! किसी भी अध्याय को दो तीन बार ध्यानपूर्वक इस प्रकार पढ़ना चाहिए जैसे तुम कोई कहानी पढ़ रहे हो। तब इसमें से कठिन बातों या विशेष शब्दों को अलग से नोट कर लो। तदुपरांत अपने किसी सहपाठी मित्र से उस अध्याय के बारे में विचार–विमर्श करना चाहिए। इस प्रकार उस विषय की तैयारी भली प्रकार से हो जाएगी तथा बाद में तुम्हें अधिक श्रम भी नहीं करना पड़ेगा। इस तरह तुम इस विषय को तो अच्छी तरह से समझ भी लोगे, साथ ही तुम्हारे मन में उस विषय पर और अधिक सामग्री पढ़ने के लिए उत्सुकता जाग उठेगी।''

''पर काका जी! मुझे तो प्राचार्य जी ने चेतावनी दी हुई है कि अगर मैं छःमाही परीक्षा में उतीर्ण न हुआ तो...''

''बेटे! जिन्दगी में कभी भी नकारात्मक सोच नहीं होनी चाहिए।'' काका जी बीच में ही बोल पड़े– ''तुम्हारे मन में हमेशा यह विश्वास होना चाहिए कि मैं यह काम कर सकता हूँ। इस प्रकार की सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कभी भी असफल नहीं हो सकता।''

कुल पल रुकने के बाद काका जी ने फिर कहा– ''और हाँ, एक बात और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रातः सैर करने से प्रचुर मात्रा में आक्सीजन हमें मिलती है जो हमें दिन भर चुस्त–दुरुस्त रखती है। लेकिन अगर हम स्वस्थ नहीं रहते तो हमें दवाई खाने की चिन्ता रहेगी या पढ़ाई करने की?'' काकाजी के इस प्रकार कहने से काका के साथ साथ रोहन भी हँस पड़ा था।

...और उसी दिन से काका जी ने रोहन की ट्यूशन बंद करवा दी थी।

रोहन अगले दिन से प्रातः रोज सैर पर जाने लगा। सैर से लौटकर नहा धोकर शांत मन से वह नाश्ता करता और विद्यालय जाकर कक्षा में शिक्षक का कहा– समझाया ध्यान से सुनता। उसकी भाग–दौड़ कम हो गई थी। अब वह मन लगाकर विषय को पूरी तरह से समझ कर याद करने लगा था।

इसी प्रकार मेहनत से पढ़ते हुए एक दिन छःमाही परीक्षाएँ भी आरम्भ हो गईं।

...और जब परिणाम निकला तो रोहन ने ७० प्रतिशत से भी अधिक अंक प्राप्त किए थे। अब रोहन बहुत प्रसन्न था। वह मन ही मन सोच रहा था कि बेकार में ट्यूशनों के चक्कर में पकड़कर उसने पैसे तथा समय तो नष्ट किया ही अपना स्वास्थ्य भी बिगाड़ लिया था।

– लुधियाना (पंजाब)

अमर शहीद सरदार भगतसिंह

कविता

विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

भगतसिंह सरदार तुम्हारा शत-शत वन्दन।
स्वतंत्रता-हित किया,
स्वयं सर्वस्व समर्पित।
मातृभूमि के लिए कर दिया,
सब कुछ अर्पित।।
कीर्ति तुम्हारी महकेगी ज्यों महके चन्दन।
भगतसिंह सरदार तुम्हारा शत-शत वन्दन।।
पंथ क्रांति का तुमने
अपनाया जीवन में।
आजादी की ज्योति-
जगाई थी जन-मन में।।
तुमने चाहा टूटे परवशता का बन्धन।
भगतसिंह सरदार तुम्हारा शत-शत वन्दन।।
झूल गये फाँसी पर तुम
होकर के निर्भय
देख अमर उत्सर्ग
कर उठी जनता जय-जय।।
होगा सदा तुम्हारा दुनिया में अभिनन्दन।
भगतसिंह सरदार तुम्हारा शत-शत वन्दन।।

- लखनऊ (म.प्र.)

झारखण्ड का राज्य वृक्ष

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

साल

• डॉ. परशुराम शुक्ल

मैदानों का वृक्ष निराला,
भारत में मिल जाता।
बर्मा और नेपाल आदि में,
भी यह पाया जाता।
धर्म और इतिहास मानता,
इसको गौरवशाली।
इससे जुड़ी हुई गाथाएँ,
गाती है वैशाली।
रेतीली मिट्टी में उगता,
और फैलता जाता।
धीरे-धीरे पूरे जंगल,
पर अधिकार जमाता।
ऊँचा पैंतिस मीटर तक यह,
विरल पत्तियों वाला।
उग सकता है किसी वृक्ष पर,
इसका बीज निराला।
जाते ही मौसम बसंत का,
फूल अनोखे आते।
पीले धवल फूल के गुच्छे,
वन उपवन महकाते।

• भोपाल (म.प्र.)

चित्र बनाओ

• राजेश गुजर

बच्चो, राष्ट्रीय पक्षी मोर का

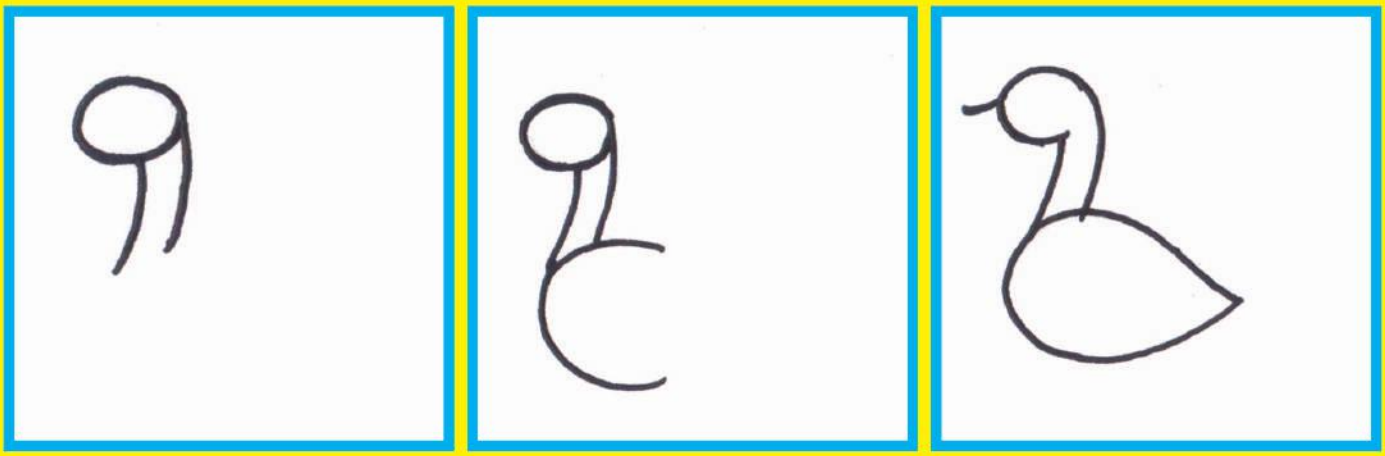

यह देश है वीर जवानों का (६)

सूबेदार जोगिन्दर सिंह

सामने से चीनी फौजियों के दल के दल इस प्रकार बढ़े आ रहे थे मानों समुद्री किनारे से एक के बाद एक लहरें भीषण वेग से गरजती आ आ कर भिड़ रहीं हों। लेकिन इन चीनियों को टक्कर देने १ सिख बटालियन के जाँबाज खड़े थे। सूबेदार जोगिन्दर सिंह के नेतृत्व में नामका चू में भारतीय ७ इन्फ्रैंटी को ध्वस्त कर तवांग की ओर बढ़ रही चीनी सेना को भारतीय बहादुरों से कड़ी चुनौती मिल रही थी। ९ सितम्बर, १९६२ को प्रधानमंत्री नेहरू की सहमति एवं रक्षा मंत्री द्वारा बैठक में निर्णय के बाद दक्षिणी चीनी के थागलारिज को खाली करवा लेने के लिए ७ इन्फ्रैंटी ब्रिगेड का नामका चू में दुर्घर्ष संघर्ष हुआ था। हमारा संख्याबल सीमित था उनका अधिक, अतः एक बार लगा मानो चीनी आक्रमण के सामने हम कमजोर पड़ रहे हैं। कम से कम भारत के समाचार पत्र तो ऐसा ही लिख रहे थे, पर सुबेदार जोगिन्दर सिंह के सैनिक दल को देखकर चीनी सेना के छक्के छूट रहे थे। लड़ते-लड़ते हमारी सेना टुकड़ी आधी रह गई थी। गोला बारूद समाप्त प्राय था, पर नहीं खत्म हो रहा था तो अदम्य शौर्य, अपार उत्साह। बन्दूकों पर गोली के अभाव में संगीनें चढ़ा लीं और 'बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' के गगन भेदी जयघोषों के साथ शत्रु सैनिकों के पेट में संगीनें घपा घप घुसने लगी। सूबेदार की जांघ में गोली लगी लेकिन उन्होंने मोर्चा नहीं छोड़ा। दुर्भाग्य से चीनी सैनिकों के संख्याबल और आधुनिक अच्छे हथियारों के आगे हमारे रणबांकुरे या तो बलिदान हुए या गंभीर घायल हुए। सूबेदार जोगिन्दर सिंह मरणासन्न अवस्था में बंदी बना लिए गए और वहीं मातृभूमि का स्मरण करते हुए उनकी देह छूट गई। चीनी भेड़ियों ने भारत के इस सिंह की अस्थियाँ तक हमें न दी।

भारत सरकार ने परमवीर चक्र से सम्मानित कर इनके प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पित की।

–

चित्र बनाकर रंग भरो।

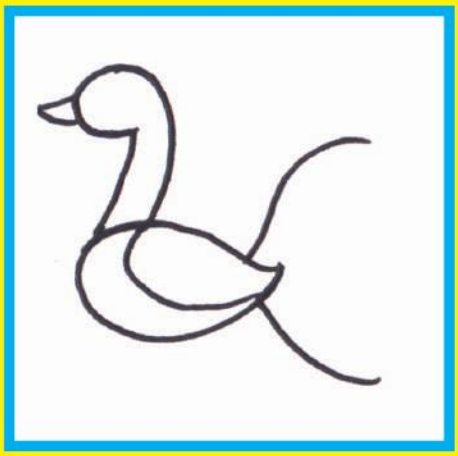

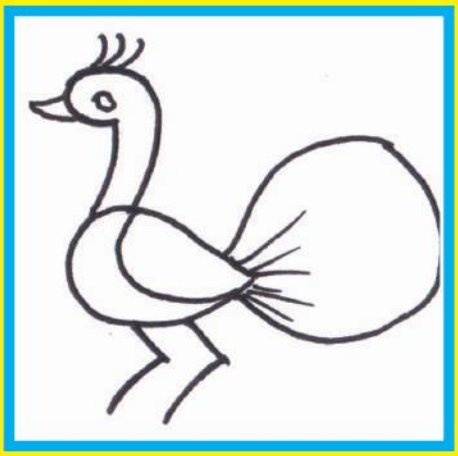

।। २० मार्च : विश्व गौरैया दिवस ।।

प्यारी गौरैया

कहानी

जया मोहन

तिलक अपनी दादा दादी के साथ रहता था। उसके माता–पिता बचपन में ही चल बसे थे। तिलक देखता कि जब उसकी दादी रोटी बनाने के लिए आटा गूँथती तो ढेरों गौरैया चीं ची करती आ जाती। वह उन्हें आटे की गोल बना बनाकर डालती। गौरैया गोली लेकर उड़ जाती। तिलक को ये देख खूब मजा आता। वह खुश होकर ताली बजाता। गौरैया भी अब तिलक को पहचानने लगी थी। कभी कभी दादी को गोली देने में देरी हो जाती तो सभी चीं चीं कर शोर मचाने लगती दादी कहती चुपचाप बैठो बन जाएगी तो दूंगी। शायद वो दादी की बात समझती थी। चुप हो जाती। जब दादी गोली डालती एक एक गोली लेकर फुर्र से उड़ जाती। तिलक देखता कि फोटो के पीछे घोंसले में जो बच्चे थे वे उनके मुँह में गोली डालती। तिलक को बहुत अच्छा लगता । दादी से कहता दादी देखो इन बच्चों की माँ इन्हें कितना प्यार करती है।''

एक दिन सुबह दादी नहीं उठी। दादा जी सुबह की सैर से लौटे बोले ''तिलक दादी दिख नहीं रही। कहाँ है?'' ''दादी सो रही है। ''अरे! वो तो कभी इतनी देर नहीं सोती।'' दादाजी जाकर दादी को जगाने लगे पर दादी तो सदा के लिए सो गयी थी। तिलक बहुत रोया। दादाजी भी चुप रहते। दादी के जाने के बाद से वे काफी चिड़चिड़े हो गए। गौरैया चीं ची का शोर करती तो वे उन्हें डॉटकर भगा देते। सारा घर सूना था। तिलक का मन भी नहीं लगता था। अब दादी के न रहने से उससे कोई न तो बात करने वाला रह गया था न ही कहानी सुनाने वाला ठीक से भोजन न मिलने से वह कमजोर भी होता जा रहा था। दादाजी ज्यादातर खिचड़ी पकाते थे। तिलक को खिचड़ी अच्छी भी नहीं लगती पर खा लेता था। कभी कभी पड़ोस की मौसी खाना पहुँचा देती थी। सारे घर में जाले लग गए थे। दादा जी ने फोटो के पीदे वाला घोंसला भी निकाल कर फेंक दिया था। अब एक भी गौरैया नहीं आती थी।

एक दिन दादाजी की दूर की बहन अपनी लड़की के साथ आयी। उनकी लड़की का प्रवेश यहाँ के कॉलेज में हो गया था। घर देखकर बोली ''भैया! ये क्या हाल बना रखा है? मामी के न रहने से घर कैसा हो गया है। आप लोग ठीक से बनाते खाते भी नहीं। दोनों कितने कमजोर हो गए हैं।'' ''क्या करूँ मेरा मन ही नहीं करता?'' बुआजी व दीदी ने सारे घर की सफाई की। रसोई घर साफ किया। आज बहुत दिनों बाद रसोईघर में ठीक से भोजन बना। तिलक ने मन से खाया। ''भैया रत्ना यहाँ रहेगी पढ़ेगी व तुम लोगों की देखभाल भी करेगी। रत्ना दीदी से धीरे–धीरे तिलक हिल मिल गया। वह तिलक की पसंद का भोजन बनाती उसे कहानी सुनाती। तिलक अब खुश रहता। वह बताता दीदी दादी के समय खूब गौरैया आती थी। घर में बहु चहल–पहल रहती थी। ''अच्छा तिलक अब तुम देखना तुम्हारी गौरैया फिर से इस घर में आएगी। क्या सच में दीदी! दूसरे दिन दीदी ने आँगन में एक बर्तन में पानी व चावल के दाने रखवाये। कुछ ही देर में कुछ गौरैया दाने लेने आने लगी। तिलक प्रसन्नता से

चिल्लाया दीदी देखो देखो गौरेया आ गई अब रत्ना दीदी भी आटा सानती छोटी छोटी गोलियाँ बना कर डालती ढेर सारी गौरैया आ जाती। कुछ तो दीदी के कंधे पर भी बैठ जाती। अब दादा जी को भी गौरेया से प्यार होने लगा था। वो पानी–दाना रखने में देर होती तो आवाज लगाते। अरे तिलक दाना पानी रख दे। दादी की फोटो के पीछे गौरैया फिर तिनके जुटाने लगी। तिलक को डर लगा की दादाजी अभी पूरा घोंसला नहीं बना है। कुर्सी पर चढ़कर हटा दूँ। नहीं नहीं तिलक। देख न तेरी दादी से ये प्यारी करती है। उसकी फोटो के पीछे घोंसला बना रही है। कुछ दिन बाद गौरैया ने उसमें अंडे दिए। छोटे छोटे बच्चे चीं ची करते अब तिलक बहुत खुश था। उसके घर से उदासी भाग गयी थी। फिर से गौरैया के आने से घर में प्रसन्नता का वातावरण बन गया। गुमसुम रहने वाले दादाजी हँसने लगे थे। वे आ आ की आवाज देकर उन्हें बुलाते भी थे। गौरेया भी बिना डर उनकी चारपाई पर बैठ जाती। तिलक मन ही मन कहता 'धन्यवाद प्यारी गौरैया! तुमने हमारे घर में फिर से खुशी का माहौल बना दिया।' वह गाता–

''प्यारी प्यारी गौरैया
चीं चीं करके आया करो
आँगन में रखा दाना पानी
आ कर के चुग जाया करो
अपनी प्यारी चीं चीं बोली से
हम सबको हरषाया करो
प्यारी प्यारी गौरैया तुम रोज
घर हमारे आया करो।''

– प्रयाग (उ.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

प्यारी चिड़िया रानी

कविता

पायल धनगर

प्यारी चिड़िया न्यारी चिड़िया
आकर गीत सुनाओ ना।
तुम बिन लगे है आँगन सूना
आकर हमें लुभाओ ना।
आओ मैंने दाने डाले
आकर इनको खाओ ना।
खाकर गीत सुनाओ ना
प्यारी चिड़िया आओ ना।

तुम तो आकर झट चली जाती
फुदक–फुदक कर कहाँ हो जाती।
हमको भी बतलाओ ना
थोड़ा तो सुस्ताओ ना।
धरती पर आ जाओ ना।
इतना भी इठलाओ ना।

ठुमक–ठुमक कर चलती हो तुम
फुदक–फुदक कर उड़ती हो तुम।
अब तो आ भी जाओ नीचे
घूमूँगी मैं आगे पीछे
प्यारी चिड़िया आओ ना।

– इन्दौर (म.प्र.)

बचपन

बाल प्रस्तुति
अदिति पटेल

याद आते दिन वो खूब
बस खेलना, रोना और सोना
न कोई शाला, न कोई पढ़ाई
न कुछ करना होता
सब हाथ में होता।
सिर्फ मस्ती करना, जिद्द करना,
दूसरों को डाट पड़वाना,
यही हमारा काम होता।

याद आते दिन वो खूब
उस सुनहरे समय के।

कभी लगता इतना क्यों रोई?
परेशान होता मुझसे हर कोई।

याद आते वो खूब
उस सुनहरे समय के।

● इन्दौर (म.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *जाम्बवंत, अंगद, हनुमान आदि वानरों का दल माता सीता की खोज में किस दिशा में गया?*
- *दोनों हाथों से बाण चलाने में समान कुशलता के कारण महारथी अर्जुन को किस नाम से जाना गया?*
- *इंदोनेशिया के किस द्वीप में एक पहाड़ी पर पाँचों पाण्डवों के सुन्दर मंदिर बने हुए हैं?*
- *गुरु गोबिन्द सिंह जी के छोटे साहबजादों को किस स्थान पर जीवित दीवार में चिनवा दिया गया?*
- *संस्कृत की प्रसिद्ध पुस्तक 'शिशुपाल-वध' के लेखक कौन हैं?*
- *अफगानिस्तान (गांधार) के अंतिम हिन्दू शासक कौन थे?*
- *प्राचीन भारत के गणितज्ञ माधवन ने पाई (π) का मान दशमलव के बाद कितने स्थानों तक ठीक-ठीक निकाल दिया था?*
- *सन् १९१५ में अफानिस्तान में जो प्रथम आजाद हिन्द सरकार बनी उसे राष्ट्रपति कौन थे?*
- *कविता की पंक्ति 'सिर काट दे दियो क्षत्राणी' किस तेजस्वी वीरांगना से सम्बन्धित है?*
- *गुजरात का कौन सा नगर यूनेस्को की विश्व धरोहरों में शामिल किया गया है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

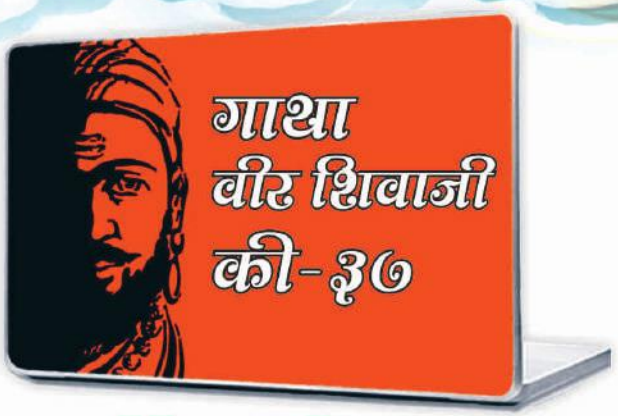

मौन प्रेरणा

शिवाजी महाराज अपने कक्ष में चिन्तातुर बैठे थे। गवाक्ष के पार, देर क्षितिज के पास कोण्डाना दुर्ग दिखाई दे रहा था। पर्वतीय घाटी का प्राकृतिक सुषमा में शिवाजी के लिए उस समय कोई आकर्षण नहीं था। उनकी भ्रू कुंचित थी और वे गहन विचारों में लीन थे द्वार पर लटका झीने रेशम का पर्दा, मन्द वायु के झोकों से हिल-हिल उठता था।

अचानक पायलों की रुनझुन और चूड़ियों की खनक से वे चौंक उठे। उन्होंने आँखें उठाकर द्वार की तरफ देखा। पर्दे के उधर एक नारी आकृति खड़ी थी। संकोच से सिर नीचा किये।

''कौन?''

''महाराज की दासी सईबाई। क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?''

''आओ देवि!'' शिवाजी ने दीर्घ श्वास लेकर कहा।

पर्दा हिला और अगले क्षण महाराज की पत्नी सईबाई साहेबा कमरे में आ गयीं। आभूषणों की रुनझुन ने कमरे के बोझिल वातावरण को मानो हलका कर दिया।

महारानी ने आसन के पास आकर अभिवादन किया और बोली ''स्वामी आज कुछ अधिक चिन्तित हैं।''

''हाँ देवि! चिन्ता की ही बात है।''

''क्या दासी को जानने का अधिकार है?''

''क्यों नहीं, तुम तो मेरी अर्धांगिनी ठहरी?''

''तो बताइए न।''

''पिताजी को आदिलशाह ने बन्दी बना लिया है और धमकी दी है कि यदि मैं स्वराज्य विस्तार के प्रयत्न त्याग नहीं देता तो वह उनकी हत्या कर देगा।''

सई बाई साहेब की आँखों में रोष उमड़ आया। आगे शिवाजी ने कहा-

''इतना ही नहीं, बालाजी हैबत के साथ आ रही मुस्लिम सेना ने स्वराज्य के एक क्षेत्र पर अधिकार कर लिया है। शाह की सेना ने सुभाग मंगल दुर्ग भी जीत लिया है। समझ में नहीं आता किससे सलाह लूँ।''

''मातुश्री से बात कीजिए न।''

''ना-ना देवि, वे तो स्वयं ही दुःखी हैं। सोनोपन्त दबीर, बापूजीपन्त, नरहेकर, मजुमदार सभी लोग स्वयं भयभीत हैं।''

''तब महाराज क्या सोच रहे हैं?''

''अजीब विकल्प की स्थिति है। एक तरफ पिताश्री के जीवन का प्रश्न है, माँ के दुःख की बात है दूसरी तरफ मेरा स्वराज्य स्थापना का प्रश्न है। यदि मैं पिता जी को छुड़ाने के हेतु स्वराज्य के प्रयास त्याग दूँ तब तो मेरे जीवन का सारा ध्येय ही समाप्त हो जायेगा।''

''तब क्या कठिनाई है। आप को भवानी ने शक्ति दी है साहस दिया है। आप निराश क्यों होते हैं महाराज?''

''आप तो जानती हैं न, शाह की तरह से आप के भाई बाजा जी नायक निम्बालकर भी हमारा विरोध कर रहे हैं।''

''तो क्या हुआ देव, स्वराज्य से बड़ा कोई नहीं होता। आप जैसे आदमी के लिए कुछ भी सम्भव नहीं है। साहस से काम लीजिए। मैं तो स्त्री ठहरी। राजनीति नहीं जानती। आप अभियान पर जायें और यदि पिताजी की रक्षा और स्वराज्य के स्थायित्व हेतु मुझे कष्ट भी भुगतना पड़े तो भी मुझे गर्व ही होगा।''

''सई बाई साहेबा! तुम इतने साहस की बात कर रही हो, इससे मुझे अत्यंत संतोष हुआ।''

शिवाजी ने अपने मंत्रियों को बुलाया और मंत्रणा कक्ष में चले गए। विचार-विमर्श के बाद उन्होंने निश्चय किया कि फतेहखाँ से पहले टक्कर ली जाए। सेना तैयार की गई। उधर दिल्ली के बादशाह के पास उन्होंने दूत भेजा साथ ही अहमदाबाद में टिकेशाह-जादा मुराद के पास भी संदेश भेजा।

शिवाजी के मुट्ठीभर सैनिकों ने फतेहखाँ पर धावा बोल दिया। शिवा ने स्वयं कमान सम्भाली।

दुर्ग के द्वार से १२०० सैनिक प्राण हथेलियों में लेकर चल पड़े महल के एक गवाक्ष से दो आतुर किन्तु आश्वस्त आँखें इस अभियान को देख रही थीं।

नहीं उसकी सफलता की कामना कर रही थी। उस दिन उन आँखों में संजोई कौन प्रेरणा शिवाजी के लिए पाथेय बन गई थी।

-

॥ २२ मार्च : विश्व जल दिवस ॥

आधा गिलास

कहानी

दिलीप भाटिया

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं एवं छात्रों द्वारा नगर में जल चेतना जागृति अभियान के अंतर्गत रैली के शुभारम्भ पर हरी झंडी दिखाने के लिए जब मुख्य अतिथि परमाणु वैज्ञानिक कैलाश प्रधानाचार्य कक्ष में पहुँचे तो विद्यालय में एक गिलास पानी प्रस्तुत किया गया। तो वह शालीनता से बोले–'' बहिन! अधिक प्यास नहीं है इसे आधा कर दीजिए।'' प्रधानाचार्य आश्चर्यचकित थीं। ''अरे! चाय कम ज्यादा मीठी फीकी तो कई अतिथि करवाते हैं पर पानी को क्यों कम करवाना?'' वे बोले ''नहीं बहिन! पानी के स्रोत कम हैं, पीने योग्य पानी का तो संकट बढ़ ही रहा है आप की रैली भी तो इसी कारण निकाली जा रही है, आधा गिलास पानी बचने से किसे और क्या काम आएगा। फिर चार जगह बिजली भी बचेगी।'' प्रधानाचार्य ने पूछा– ''बिजली कैसे बचेगी? भाई।'' वैज्ञानिक बोले– ''बहिन ट्रे में पानी का गिलास आने से पहले चार स्थानों पर इस पानी के लिए बिजली की आवश्यकता होती है, पहले फिल्टर हाउस में पंप की मोटर, दूसरे आपके विद्यालय के ऊपर टंकी में पानी चढ़ाने के लिए मोटर, तीसरे एक्वागार्ड में फिल्टर करने हेतु, चौथे मेरे लिए आपके शिक्षक कक्ष में रखे फ्रिज में से शीतल जल की बोतल से इस गिलास में पानी लाया गया है। फ्रिज भी बिजली से ही चलता है जितना आवश्यक है, उतना ही पानी हम लेंगे, तो पानी की बचत के साथ बिजली की भी चार स्थानों पर बचत होगी। बिजली की भी तो कमी है, एक पंथ दो काज, फिर विद्यालय का बिजली का बिल भी कम आएगा, जनता के कर का सदुपयोग कहीं और होगा।'' सभी शिक्षिकाएँ प्रसन्न थीं। ''श्रीमान आपका यह पाठ हमारे घरों, सामाजिक समारोहों में भी उपयोगी रहेगा, आपके इस एक दीपक से हम कई दीप प्रज्वलित करने का प्रयास करेंगी, हमारा निवदेन है कि रैली को हरी झंडी दिखाने से पूर्व आप हमारे विद्यालय की बेटियों को पानी बचाने हेतु कुछ और सूत्र भी बतलाइए।''

कैलाश ने उद्‌बोधन में छात्राओं को उपरोक्त सूत्र के साथ कुछ और उपाय भी बतलाए।'' बहनों एवं बेटियो! पानी की जितनी आवश्यकता हो, उतना ही पीने के लिए लेना। नहाने के पश्चात नल बन्द कर देना। फुहारे के स्थान पर बाल्टी मग से नहाना, दाँतों पर ब्रश करने के पश्चात दाँत साफ करने के लिए ही नल खोलना, पिता जी से प्रार्थना करना कि दाढ़ी बनाने समय पूरे समय नल खोलकर नहीं रखें, आवश्यकतानुसार ही खोलें, कमरा अधिक ठंडा हो जाए तो कूलर का पंप बंद कर देना, वर्षा ऋतु में तो हवा में इतनी नमी रहती है कि कूलर के पम्प चलाने की आवश्यकता ही नहीं होती, मात्र पंखे से ही काम चल जाता है। जिस कमरे में कोई नहीं है उस कमरे का कूलर बन्द कर दिया करो। अतिथियों के लिए बाजार से बच्चों वाले छोटे गिलास ले आओ, उन को बुरा भी नही लगेगा कि आधा गिलास ही पानी दिया, मांगने पर दुबारा दे सकती हो, पर अनावश्यक अपव्यय क्यों?

घर में माँ, भाभी, दादी काम करने आने वाली बहिन से प्रार्थना करना कि पहले सारे बर्तन पर डिश सोप, पाउडर लगाने के बाद मात्र बर्तन धोते समय ही नल खोलें, पोंछा लगाने के पश्चात पानी को गृह वाटिका में या बालकनी के गमलों में डाल दें, फेंके नहीं। ऊपर छत पर पानी की टंकी में फ्लोर वाल्व लगवा लें, वरना टंकी भर जाने पर मोटर बंद करना भी याद रखें। कई घरों में टंकी भरने के पश्चात भी पानी बहता रहता है, रास्ते, गली बाजार, मोहल्ले में सार्वजनिक नल

बहते मिलें तो उन्हें बंद कर दें, पाइप लाइन टूटी दिखे तो जल विभाग को फोन कर दें। ताकि पानी व्यर्थ नहीं बहे। पिताजी या दादाजी को कहना कि अपना मकान बनवाते समय छत पर रेन वॉटर हारवेस्टिंग सिस्टम लगाएँ ताकि वर्षा के पानी का संचय हो सके, बचे हुए पानी का सदुपयोग गर्मी में बाहर पक्षियों के लिए परिंडा (पानी पीने का स्थान) रखकर किया जा सकता है। स्वास्थ्य हेतु ८ से १० गिलास पानी पीना होता है, छोटा गिलास १५-२० पानी होंगे, रेल्वे स्टेशन, स्टेण्ड पर चाय १० रु. की है पर पानी की बोतल १५ रु. की पर प्यास तो पानी से ही बुझती है। कंजूसी नहीं करें, पर फिजूलखर्ची पर अनुशासन लगाना ही होगा, विद्यालय में ऐसे ही उपायों पर मंथन करें घर परिवार समाज रिश्तों में भी ये सूत्र बतलाए। आप की रैली की सफलता के साथ सार्थकता के लिए शुभकामनाएँ।''

करतल ध्वनि के मध्य कैलाश जी ने रैली को हरी झंडी बतलाई फिर प्रधानाचार्य से कहा- ''बहिन! बोलते बोलते गला सूख गया है आधा गिलास पानी और मंगवा दीजिए।''

आधा गिलास प्रस्तुत करते समय प्रधानाचार्य के साथ शिक्षिकाएँ भी मुस्कुरा रही थी।

- रावतभाटा (राज.)

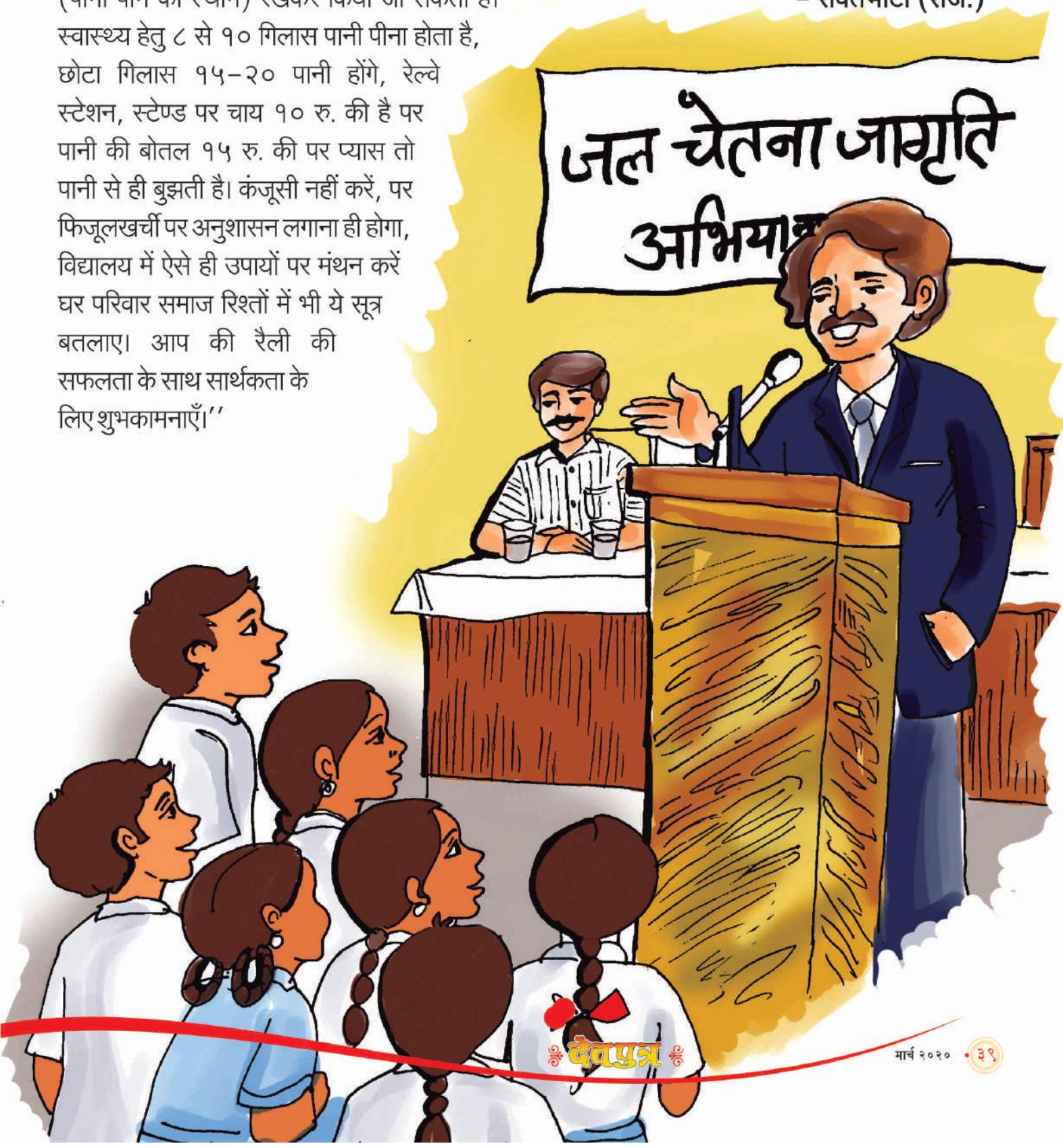

विषय एक

आहाहा

• डॉ. श्रीप्रसाद

शादी है संजीव की, आहाहा क्या बात
गरम जलेबी आ गई पूरी तीन परात
हलवाई संजीव है, बहुत बड़ा है नाम
सबसे अच्छा चौक में इनका ही है काम
पेड़े खाओ, इमरती, क्या सुंदर आकार
रसगुल्ले की धूम है, आते बारंबार
लो गुलाब जामुन चखो, या खाओ भरपूर
लड्डू हैं बेकार ही, उनको रखना दूर
बाराती हैं तीस ही, मीठा है हर मेल
हलवाई का ब्याह है, खाओ ठेलमठेल
रसगुल्ले तारे खिले, भरा हुआ आकाश
मैंने बारह खा लिये, रखे यहीं पर पास
क्या खायें क्या छोड़ दें, करते सभी विचार
मिलता यह मौका नहीं, हर दम इसी प्रकार
शादी हो ऐसी सदा, रहे सभी की मौज
टूट पड़ें खाते समय, जैसे लड़ती फौज।

• वाराणसी (उ.प्र.)

दुकान मधुर मिष्ठान्न

• गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

बिल्ली मौसी ने खोली दुकान मधुर मिष्ठान,
उद्घाटन के लिए आ गए, हाथीमल श्रीमान।
गरम जलेबी, गाजर हलवा, लड्डू मोतीचूर,
बर्फी पेड़े, कलाकन्द, देशी घी से भरपूर।
रसगुल्लों को देख-देख कर मुँह में आता पानी,
भीनी-भीनी से सुगन्ध से, बढ़ती, है हैरानी।
हिरन लोमड़ी, भालू, बन्दर, डाक्टर डाँगी आए,
हाथी ने फीता काटा, सब खुश होकर चिल्लाए।
मौसी बोली पर्वोत्सव पर दस प्रतिशत की छूट,
स्वास्थ्य साथ खिलवाड़ न होगा नहीं मचेगी लूट।
कुछ ही दिन में यहाँ मिलेगी, चीनी रहित मिठाई,
व्रत वालों के लिए रहेगी, उत्तम कोटी सफाई।
मुख्य अतिथि ने एक थाल भर लड्डू जमकर झाड़ा,
मिले शेष को एक-एक तो पढ़ने लगे पहाड़ा।
है मिष्ठान्न शुद्ध पर महंगा तनिक नहीं संदेह,
बन्दर मामा बोले, भैया! मुझको तो मधुमेह।
कहा लोमड़ी ने रसगुल्ले घर लेकर जाऊंगी,
पास-पड़ोस बताकर सबसे, बिक्री को बढ़वाऊँगी।

• लखनऊ (उ.प्र.)

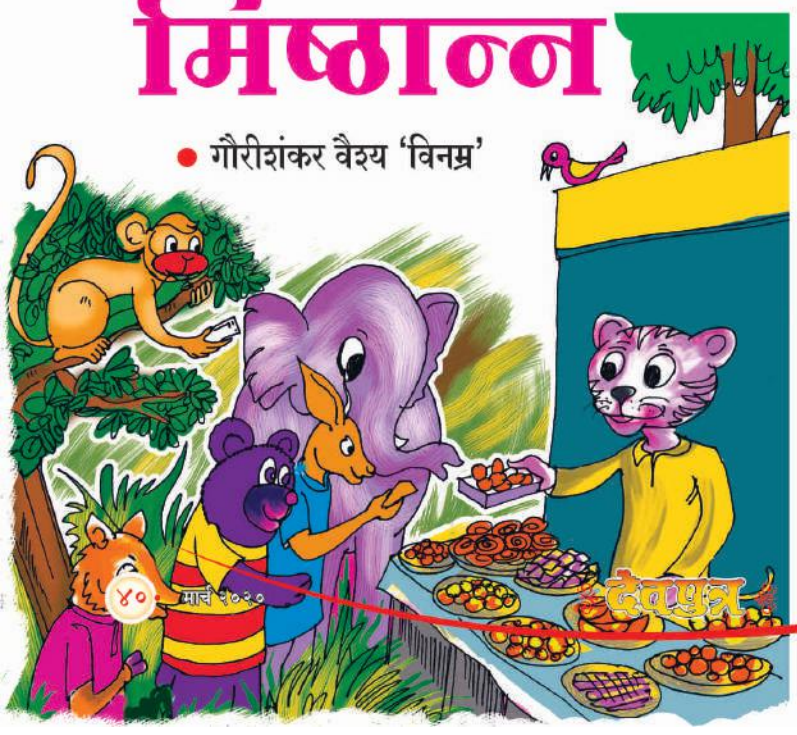

मटकू-चटकू

● चक्रधर शुक्ल

मटकूराम, चटकूराम
खाने में दोनों का नाम
सारी पंगत खा जाती
इनकी भूख न मिट पाती
बीस कचौड़ी तीस पुआ
सौ पुड़ी में नहीं हुआ
खीर, मिठाई मेवा-फल
खा करके तब निकले हल
मटकूराम, चटकूराम
गाँव-शहर में इनका नाम

दस लीटर कम दूध है
जाने कहाँ की भूख है
पकवानों की बात न कर
मटकू-चटकू बड़े निडर
इन्हें बुलावा भेजा है
अपना माल सहेजा है
मटकूराम, चटकूराम
खाने में, भूलें परिणाम
मटकूराम, चटकूराम
खाने में दोनों का नाम

● बर्रा (उ.प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'मिष्ठान्न' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

....
....
....
....
....
....
....

भाई बहिन का दुःख

कहानी

सीमा जैन 'भारत'

जिस दिन से वे दोनों यहाँ हैं उन्होंने एक दूसरे को भाई बहन जैसा प्यार किया। कुछ लोगों के आने पर वे डर जाते तो किसी के आने पर प्रसन्न हो जाते थे। एक का दुःख दूसरे का भी होता था। चोंट एक को लगे पर पीड़ा तो उन दोनों को ही होती थी।

आज जैसे ही टप्पू दौड़ता हुआ आया दोनों भाई बहिन डर गए। वह जानते थे अब क्या होने वाला है। और वही हुआ जो हर बार होता था। उन दोनों ने अपनी आँखे बंद कर ली। उनके डरने से टप्पू कौनसा रुकने वाला था। उसने झट से दरवाजे को खोला और बड़ा सा लोहे का दरवाजा भड़ाऽऽऽक् से जाकर दीवार से टकराया।

पीड़ा के मारे वह दोनों कराहने लगे। उस लोहे के विशाल दरवाजे ने अपनी बहिन दीवार से कहा – ''बहिन! मैं क्या करूँ, मुझे माफ करना। यह टप्पू हमेशा ऐसे ही दरवाजा खोलता है, और तुम्हें बहुत जोर से लग जाती है। देखो कैसे सीमेंट झरने लगी है मुझसे?''

अपने सिर को संभालते हुए दीवार बोली– ''अरे, मेरे दुःख की बात कर रहे हो। तुम भी तो देखो तुम्हें भी तो कितनी जोर से चोट लगती है। अब इस लड़के को कौन समझाए कि इतनी जोर से दरवाजा खोलने पर दरवाजे और दीवार दोनों घायल हो जाते हैं।''

दोनों भाई बहिन बात कर ही रहे थे कि उधर से दादाजी निकल कर आए और उन्होंने खुले दरवाजे को प्यार से बंद कर दिया। दरवाजा और दीवार आँख में आँसू लेकर एक दूसरे से दूर हुए। फिर भी वो एक फ्रेम से तो जुड़े ही थे। एक दूसरे का हाथ थामे ऐसे ही सुख दुःख सहते आ रहे हैं।

यह सब तो रोज की बातें हैं। अब सोसायटी ही इतनी बड़ी है कि

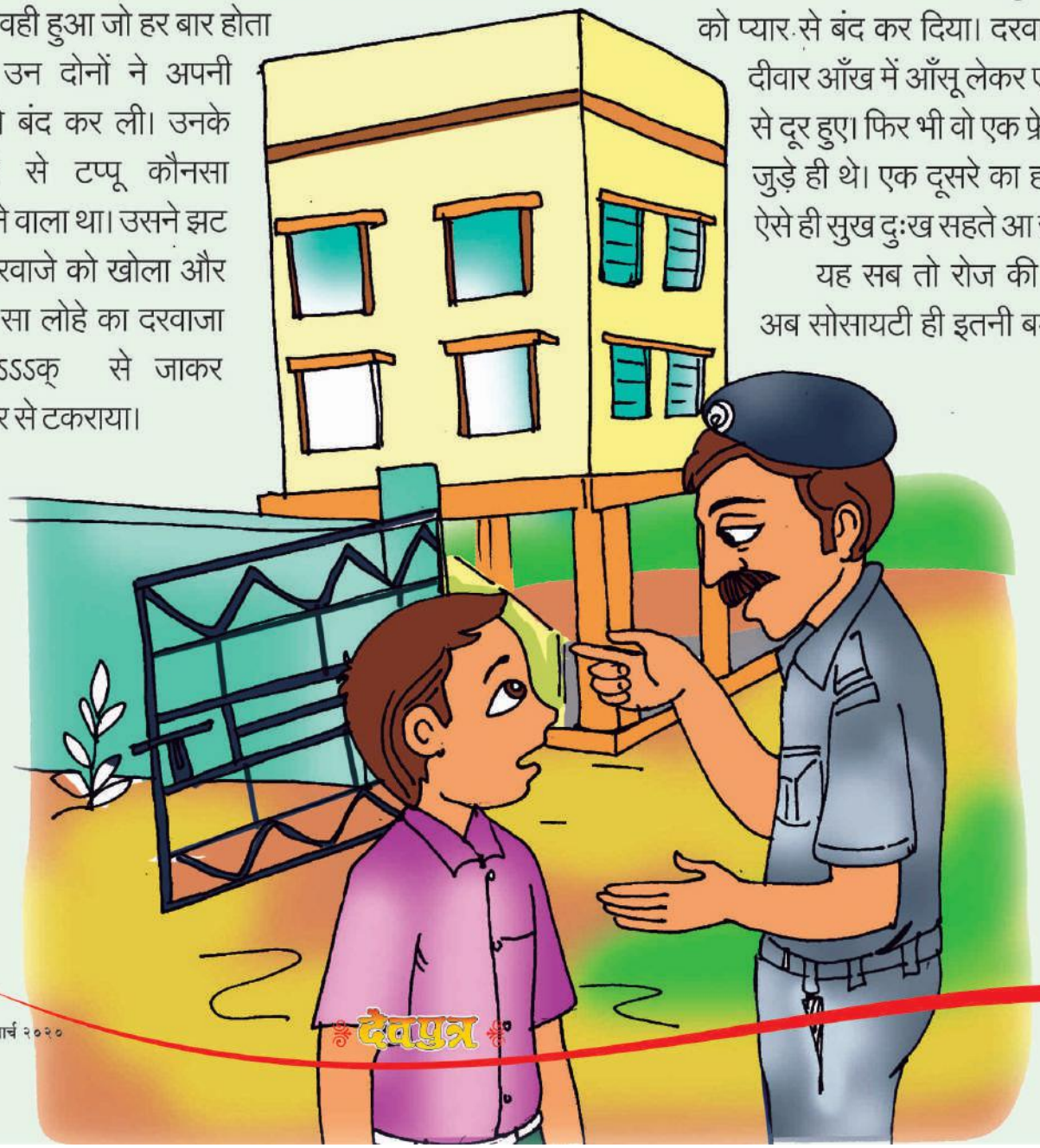

सब अपने अपने ढंग से इस बड़े से लोहे के दरवाजे का उपयोग करते हैं। कोई अपनी कार से धक्का मारकर उसे खोलता है तो दरवाजा जोर से दीवार से जा टकराता है। कभी कोई दरवाजा खुला ही छोड़कर चला जाता है तो अंदर रखे पीछे वाली काकी के गमले के पौधे को कोई जानवर खाकर चला जाता है।

कभी गाय वहाँ गोबर देकर जाती है तो किसी की साइकिल गिर जाती है। किसी के कपड़े जमीन पर गंदे हो जाते हैं। मगर अब किस को कौन समझाए? झगड़े होते हैं मगर हर कोई तो समझता ही नहीं है।

आज सुबह बिल्डिंग में एक चौकीदार आ गए। उन्होंने दरवाजे के पास अपनी कुर्सी डाली और वहीं बैठ गए। अब हर आने जाने वाले के लिए वही दरवाजा खोल रहे थे। आज दरवाजा और उसकी बहिन दीवार दोनों बहुत प्रसन्न थे। इतने में सामने से टप्पू दौड़ता हुआ आया। दरवाजा उसे देख कर डर से काँपा पर चौकीदार ने टप्पू को आते देखा तो वह अपनी कुर्सी पर ही बैठा रहा।

आज उनका पहला दिन था। वे नहीं जानते थे कि टप्पू इतनी असावधानी से दरवाजा खोलता है। एक बार फिर दरवाजा दीवार से भड़ाऽऽक् से जाकर दीवार से जा टकराया। दोनों भाई बहन पीड़ा से सिसक उठे। आज सुबह से वह दोनों बहुत प्रसन्न थे कि उन्हें अब कोई कष्ट नहीं देगा।

उन्हे क्या पता था कि चौकीदार के रहते भी उन्हें चोट पहुंचाई जा सकती है। दरवाजा खोल कर भागते हुए टप्पू को चौकीदार ने आवाज दी– ''बच्चे! जरा इधर आना।''

टप्पू ने नही सुना तो चौकीदार भागते हुए उसके पास गए। अपने पास उसे आता देख टप्पू डर गया वह तो तेज भागा तो फिसलकर गिर गया। चौकीदार ने उसे आगे बढ़कर उठाया। गिरने से टप्पू के घुटने छिल गए तो उसने उसकी पीठ पर हाथ रखकर उसे सहलाया और पूछा– ''दर्द हो रहा है?''

''हाँ!'' टप्पू ने अपने घुटने पर हाथ रखते हुए कहा।

''तुम मेरी आवाज से डर कर भागे क्यों?'' टप्पू इसका कोई जवाब न दे सका।

''यह तुमने इतनी जोर से दरवाजा क्यों बंद किया?''

''उससे क्या अंतर पड़ता है?'' टप्पू ने उपेक्षा से पूछा।

''अंतर नहीं पड़ता? इससे दीवार टूट रही है। दरवाजा कमजोर हो रहा है। लकड़ी का दरवाजा के साथ यदि ऐसा करते तो कब का टूट गया होता। फिर तुम तो विद्यालय जाते हो। क्या तुम्हें पता नहीं कि जड़ वस्तुओं में भी जान होती है।''

''क्या लोहे में जान है? आपको किसने बताया?''टप्पू ने आश्चर्य से पूछा।

''मैंने अपनी विज्ञान की पुस्तक में पढ़ा है।''

''तो क्या आप विद्यालय जाते हो?''

''हाँ, मैं पहले पाँचवी कक्षा तक पढ़ा था। अब फिर से विद्यालय जाता हूँ। हर चीज जिसमें अणु और परमाणु होते है। वह निरंतर घूमते रहते हैं। वही हम जिंदा लोगों में घूमते हैं और वही निर्जीव में भी, तो फिर इनमें भी जान हुई ना? बस फर्क यह है कि वे हमारी तरह बोल नहीं सकते।''

''तो आज के बाद तुम दरवाजा धीरे से खोलोगे?'' चौकीदार प्यार से टप्पू से कहकर जब दरवाजा बंद करने को आगे बढ़े तो टप्पू दौड़ता हुआ उसके आगे गया और उसने कहा–''अभी भी दरवाजा मैं ही बंद करूँगा।'' टप्पू के दरवाजा बंद करते ही चौकीदार और टप्पू दोनों मुस्कुरा उठे। मुस्कुराए तो दीवाल और दरवाजा भी था बस वह किसी ने देखा नहीं।

– ग्वालियर (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

मूल्य ३९५/-

बालमन के रोचक गीत

हिन्दी बाल साहित्य संसार के यशस्वी रचनाकार एवं सपांदक डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल द्वारा रचित कल्पना, यथार्थ, प्ररेणा, सूचना, जिज्ञासा, पीड़ा, चिंता, मनोरंजन, संस्कार, विज्ञान एवं प्रकृति चिंतन के भावों को रोचकता से अभिव्यक्त करते ५१ बाल गीतों का खजाना।

प्रकाशक – न्यू कन्सैप्ट्स पब्लिशर्स, १३६२ अप्पर मैज्जेनाइन फ्लोर, कश्मीरी गेट, दिल्ली ११०००६

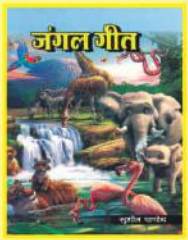

मूल्य १००/-

जंगल गीत

बाल साहित्यकार सुशील पाण्डेय द्वारा बाल मन की चपलता, चंचलता, जिज्ञासा, कल्पना और खिलंदड़ेपन को व्यक्त करते २१ बाल गीत।

प्रकाशक – वी. पी. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, डब्ल्यू–२, ८६२ बसंत विहार, नौबस्ता, कानपुर (उ.प्र.)

बाल काव्य की सरस कवियित्री आशारानी जैन 'आशु' द्वारा लिखित एवं श्री अंकित प्रकाशन द्वितीय ब्लाक, वीणानगर, सेक्टर –६ उदयपुर राजस्थान द्वारा प्रकाशित।

मूल्य ३०/-

कलरव

शिशु गीतों का सुन्दर पिटारा

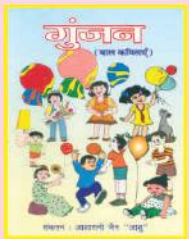

४०/-

गुंजन

३४ बाल कविताएं जो छोटी है पर सुहावनी है लुभावनी है।

बाल रचनाकार डॉ. अजीत सिंह राठौर 'लुल्ल कानपुरी' द्वारा रचित एवं बाल साहित्य संवर्द्धन संस्थान १४२० हनुमंत विहार नौ बस्ता कानपुर (उ.प्र.) २१ द्वारा प्रकाशित

मूल्य ३०/-

किट्टू बिट्टू की शैतानी

बाल मनोविज्ञान की धरा पर उपजी २७ बाल कविताएं

४०/-

चुनमुन चूहा

बालमन की उड़ानों, कल्पना व अनुभूतियों से पगी २७ बाल कविताएँ

अगरबत्ती की सुगंध

चित्रकथा : देवांशु वत्स

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

रासबिहारी बोस कलकत्ता हाईकोर्ट के एक अंग्रेज जज के सामने किसी मामले में जोर-शोर से बहस कर रहे थे। बहस समाप्त करते हुए बोस ने कहा, ''आशा है, श्रीमान् ने मेरी बातें ध्यान से सुनी होंगी।''

जज ने उपेक्षा से कहा, ''सुनी तो थीं, लेकिन आपकी बातें एक कान से आती थीं ओर दूसरे से निकल जाती थीं।''

इस पर रासबिहारी बोल उठे, ''श्रीमान् सच ही कहते हैं, मालूम होता है दोनों कानों के बीच में कुछ नहीं है।''

आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल गोल टोपी लगाया करते थे। एक बार एक भिखारी उनके सामने आ खड़ा हुआ और हाथ फैलाते हुए बोला, ''बाबू साहब की टोपी ऊंची रहे।'' शुक्ल जी ने भिक्षा देते हुए उससे पूछा, ''अगर किसी औरत से भीख मांगनी हो, तो क्या कहोगे?''

बेचारे भिखारी असमंजस में पड़ गया। जब वह कुछ बोल न सका तब आचार्य शुक्ल ने स्वयं उसका समाधान करते हुए कहा, ''कहना, मेम साहेब की जूती ऊंची रहे।''

सही उत्तर :
देवपुत्र प्रश्नमंच – (१) सम्राट विक्रमादित्य (२) वराहमिहिर (३) अभिज्ञान शाकुंतलम् (४) शक (५) उज्जयिनी (६) बैताल पच्चीसी (७) शिप्रा (८) न्यायवादिता (९) हरसिद्धि (१०) भर्तृहरि।
संस्कृति प्रश्नमाला –दक्षिण, सत्यसाची, जावा, सरहिन्द, महाकवि माघ, महाराजा त्रिलोचन पाल, चौदह, राजा महेन्द्रप्रताप, हाड़ी रानी, कर्णावती (अहमदाबाद)
उलझ गए – भैंस के मालिक मोहित के पिताजी हैं।

आपकी पाती

देवपुत्र प्राप्त हुआ। रचना प्रकाशन हेतु धन्यवाद। अपनी बात के माध्यम से महान विद्वान अष्टावक्र के सद्गुणों का विवेचन प्रेरणास्पद है। पौराणिक आख्यान 'गरूड़ की उत्पत्ति' संदेशप्रद रहा। कहानियाँ सुबोध का सपना, छोटे कुल्फी वाले, चाँद की किरण अत्यंत रोचक लगीं।

कविता, मनोरंजन, बाल लेखनी, स्तम्भ आदि की विषय वस्तु भी चित्ताकर्षक प्रदान की गयी है।

● **गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', लखनऊ (उ.प्र.)**

॥ बाल गीत ॥

आए सबकी बारी

कविता

पवन पहाड़िया

हर महीने की कथा है न्यारी।
मार्च माह क्यूं सब पर भारी॥
इस महीने में हम डरते हैं।
जितना पढ़ा उसे रटते हैं॥
पेपर बिगड़ ना जाय कहीं डर,
दूर भगाने को डटते हैं॥
उड़ जाती निद्रा रातों की,
प्यारी थी पर लगती खारी॥
मार्च माह क्यूं सब पर भारी॥
बापू भी तो रोज रात को,
घर पर अब देरी से आते॥
दादाजी से पूरे महीने,
कभी नहीं मिलते बतियाते॥
कहते जल्दी ऑफीस जाकर,
मुझे निभानी जिम्मेदारी॥
मार्च माह क्यूं सब पर भारी॥
माँ भी मुझसे बात न करती,
कहती थक गई हूँ सोने दो।
खड़ी वहं परीक्षा लेने,
पेपर पहले सब होने दो॥
अब दादा के पास बैठकर तुम,
प्रश्न पत्र की कर तैयारी॥
मार्च माह क्यूं सब पर भारी॥
मैं भगवान से पूछ रहा हूँ,
यह क्या तूने दांव चलाए।
मार्च महीनें में ही सबको,
चिंता क्यूं जाती है खाए।
कर दो ना इसका बंटवारा,
जिससे आए सबकी बारी॥
मार्च माह क्यूं सब पर भारी॥

– डेह (राज.)

SURYA

Energising Lifestyles

सूर्या के प्रोडक्ट्स भारत ही नहीं बल्कि विश्व के 50 से अधिक देशों में निर्यात किये जाते है। सूर्या का संकल्प भारत के जन-जीवन में विकास की रोशनी भरने के साथ-साथ देश की प्रगति में अपना योगदान देना भी है।

SURYA ROSHNI LIMITED

E-mail: consumercare@sroshni.com I www.surya.co.in I Tel.: +91-11-47108000, 25810093-96

Toll Free No. : 1800 102 5657

/suryalighting I /surya_roshni

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु वर्ष २०१९ के लिए सभी बाल साहित्यकारों से उनकी प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

- इस वर्ष यह पुरस्कार बाल लोककथा के लिए निश्चित किया गया है।
- आप अपनी इस विधा की कोई एक रचना ३१ मार्च २०२० तक अवश्य भेज दें।
- रचना हिन्दी में हो।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवुपत्र' का होगा। जिसे देवपुत्र किसी प्रकाशन संस्थान के सहयोग से भी प्रकाशन की योजना कर सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाओं को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००-५०० रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

प्रविष्टि भेजने का पता -

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहितय पुरस्कार २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९ के लिए यात्रा वृत्तान्त की पुस्तक हेतु प्रदान किया जाना निश्चित हुआ है। इसकी पुरस्कार निधि ५०००/- पाँच हजार रुपए है।

इस हेतु आपकी प्रकाशित कृति (पुस्तक) की तीन प्रतियाँ ३१ मार्च २०२० तक निम्नांकित पते पर सादर आमंत्रित हैं।

प्रविष्टि भेजने का पता –

माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

प्रिय बच्चो!

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक श्री शान्ताराम जी भवालकर की स्मृति में आयोजित इस प्रतियोगिता में आप बच्चों द्वारा लिखी गई मौलिक एवं स्वरचित कहानियाँ आमंत्रित हैं। आपकी कहानियाँ हमें ३१ मार्च २०२० तक अवश्य मिल जाना चाहिए।

प्रतियोगिता के पुरस्कार हैं –

प्रथम १५००/-, द्वितीय ११००/-, तृतीय १०००/- एवं ५५०/- रुपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

अपनी कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता (पिनकोड सहित) अपना दूरभाष/मोबाइल नं. एवं अपना या अभिभावक का बैक खाता क्रं. आई एफ एस कोड़, खातेदार का नाम बैंक, शाखा का नाम भी अवश्य लिख भेजें जिससे पुरस्कार राशि सीधे उस खाते में जमा की जा सके। प्रविष्टि भेजने का पता –

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

• विष्णुप्रसाद चौहान

आजकल के लड़के जो साईकिल की चैन भले ही न चढ़ा पाएँ...

पर मोबाइल पर पैटर्न लॉक ऐसे लगायेंगे जैसे काले धन का सारा राज उसी में छिपा हो।

******

डॉ. रत्नेश – डॉ. अनिल तुम्हारे पिता नेत्र विशेषज्ञ है, पर तुम दाँत के डाक्टर क्यों बने?

डॉ. अनिल – कॉलेज में कुछ खास लड़के– मुझे दाँत दिखाते चिढ़ाते थे ना। आयें मेरे पास कभी न कभी ''खराब दाँत के साथ दो अच्छे दाँत तुरंत उखाड़ूंगा।''

******

रघुवीर (दाँत के डाक्टर के पास) – डॉ. मेरी दो दाढ़े निकला दें।

डॉ. लक्ष्मण– आइये, मेरा काम ही है।'' और हँसे

रघुवीर – ''डॉ. दाढ़ आराम से निकाली, अब उससे सीमेंट भर दो।''

डॉ. लक्ष्मण – मुझे मालूम है, पर तुझे मैं क्या मिस्त्री लगता हूँ?

– ढबला हर्दू (म.प्र.)

खाओ तुम भरपूर मिठाई

बाल प्रस्तुति

शीतल

फूलों का रस पीकर आई
सुंदर ड्रेस पहन शरमाई।
अपने प्यारे पंख हिलाती,
सैर कहीं से करके आई।
खुद खाकर आई है बरफी,
गरम जलेबी मुझे खिलाई।
चेहरे पर लेकर मुस्कान,
उड़कर वह मेरे घर आई।
नाम बता कर झटपट इसका,
खाओ तुम भरपूर मिठाई।

– खटीमा (उत्तराखण्ड)

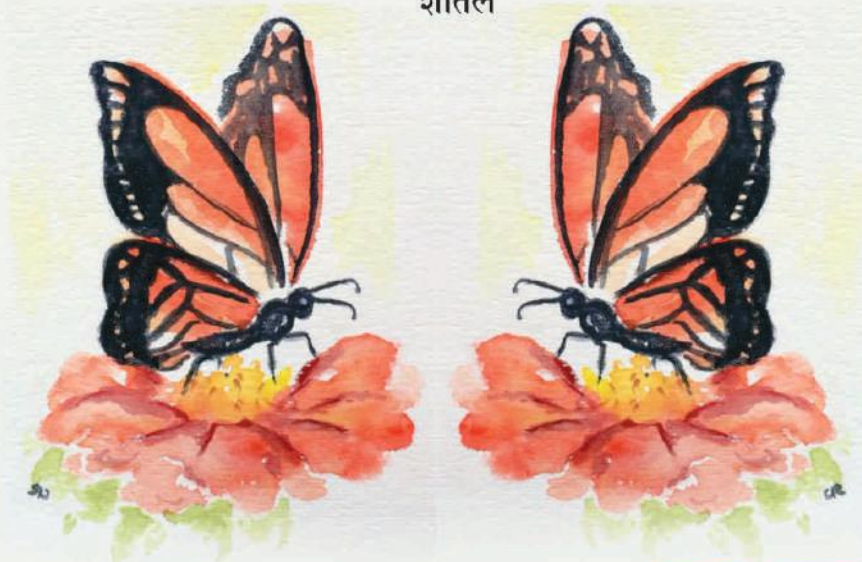

Anand Super 100

Our Vision Your Success

FOR CIVIL SERVICES

12वीं के बाद कॉलेज के साथ बनें प्रशासनिक अधिकारी

IAS/IPS MPPSC MPSI

FOUNDATION BATCHES 1 year 2 year 3 year

विशेषताएं

- इंदौर में पहली बार सिविल सेवा में चयनित विशेषज्ञों एवं अनुभवी मार्गदर्शकों की टीम से पढ़ें।
- उच्च गुणवत्ता की अध्ययन सामग्री।
- प्रतिदिन टेस्ट व सप्ताहिक टेस्ट।
- प्रोजेक्टर एवं पॉवर पाइंट के माध्यम से पढ़ाई।
- तथ्यों को याद करवाने हेतु विशेष तकनीक का प्रयोग।
- वातानुकूलित कक्षाएं व बैठने की उत्तम व्यवस्था।
- विषय संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए व्यक्तिगत इंटरेक्शन।
- वातानुकूलित पुस्तकालय एवं लाइब्रेरी की सुविधा।
- छात्राओं के लिए विशेष बैठक व्यवस्था।
- ऑनलाइन व ऑफलाइन प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज की निःशुल्क सुविधा।
- कक्षाओं में डीजिटल बोर्ड का इस्तेमाल इमेज ऑडियो, विडियो आदि की मदद से कठिन विषयों को आसान बनाने की शैली।
- इंदौर में बेस्ट प्रीमाइसिस में अध्ययन का लाभ लें।

आनंद भवन, 7 इन्द्रपुरी, भंवरकुँआ, इंदौर Mob.: 0731-4978828, 9300797777, 9752138484

Anandsuper100.com

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०२/२०२०
प्रेषण तिथि २९/०२/२०२०
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना